pnb

इंद्रधनुष संवाद

अंचल कार्यालय गुवाहाटी की छमाही हिन्दी पत्रिका

अंक-11, वर्ष 2025-26, अप्रैल - सितंबर 2025

अंक 11

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank ...the name you can BANK upon !

अंचल कार्यालय, युनाइटेड बिल्डिंग, हेम बरुआ रोड, पान बाजार, गुवाहाटी - 781001 || दूरभाष : 0361 3515752 || zoguwraj@pnb.co.in

गुवाहाटी अंचल को प्राप्त राजभाषा पुरस्कार

"हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।" - मौलाना हसरत मोहानी।

राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह की झलकियां

प्रबंधकीय मंडल

मुख्य संरक्षक
श्री विनय कुमार
अंचल प्रमुख

संरक्षक
श्री पामु रोज कुमार
उप अंचल प्रमुख

मार्गदर्शक

श्री अनूप कुमार सिंह
सहायक महाप्रबंधक

श्री सत्यप्रिय दास
सहायक महाप्रबंधक

परामर्शदाता

श्री उमंग अग्रवाल
मुख्य प्रबंधक

मुख्य संपादक

श्री अनिल कुमार भगत
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय समिति

सुश्री पूजा चौधरी
राजभाषा अधिकारी
डिब्रूगढ़ मंडल

श्री साहिल कुमार साव
राजभाषा अधिकारी
नगांव मंडल

श्री सागर साव
राजभाषा अधिकारी
गुवाहाटी मंडल

श्री भानु प्रताप वैष्णव
राजभाषा अधिकारी
अगरतला मंडल

सुश्री नेहा कुमारी साव
राजभाषा अधिकारी
जोरहाट मंडल

श्री विक्रम प्रजापति
राजभाषा अधिकारी
इम्फाल मंडल

प्रकाशन संपर्क

पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, गुवाहाटी, युनाइटेड बिल्डिंग, हेम बरुआ रोड, पान बाजार, गुवाहाटी - 781001

ई-मेल : zoguwraj@pnb.co.in, दूरभाष : 7896941173

यह गृह पत्रिका केवल आंतरिक परिचालन हेतु है। 'पीएनबी इंद्रधनुष संवाद' में प्रकाशित कोई भी सामग्री जैसे लेख, कविता प्रेषक की स्वयं की है, इसमें संपादक अथवा बैंक का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक ! punjab national bank ...the name you can BANK upon !

pnb इंद्रधनुष संवाद

अंचल कार्यालय गुवाहाटी की छमाही हिंदी पत्रिका

अंक-11, अप्रैल - सितंबर 2025

पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, गुवाहाटी की अब तक की प्रकाशित पत्रिकाएँ

अनुक्रमणिका

शुभ-संदेश

1	विनय कुमार, अंचल प्रमुख का संदेश	6
2	पामु रोज कुमार, उप अंचल प्रमुख का संदेश	7
3	संपादकीय : अनिल कुमार भगत, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)	8

गद्य-लेखन

4	समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए अतिरिक्त टैरिफ का प्रभाव	उमंग अग्रवाल	10
5	एक्ट ईस्ट नीति और इसके दूरगामी परिणाम	देबज्योति कर्माकर	13
6	हाल के दिनों में हुए प्राकृतिक दुर्योगों में वृद्धि के कारण और भविष्य में इनसे बचने का उपाय	देवकर्ण सिंह	16
7	दो मोमबतियाँ - एक जीवन दर्शन की कहानी	पूजा चौधरी	19
8	कृत्रिम बुद्धिमता के युग में राजभाषा हिंदी का महत्व	हेमंगा पाठक	21
9	सिंगापुर : अनुशासन, नवाचार और सांस्कृतिक संगम का पथ	पूजा चक्रबर्ती	23
10	मिशन कर्मयोगी: नियम आधारित प्रशिक्षण से भूमिका आधारित प्रशिक्षण तक का ऐतिहासिक सफर	अथोपकम निशिकांता सिंह	26
11	महिला सशक्तिकरण : देश के विकास में सहायक	अंशिता मौर्या	28
12	ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाएँ : चुनौतियाँ एवं अवसर	शोभित मेहता	30

कव्यांजलि

13	विश्व विजेता हैं हम	सत्यप्रिय दास	32
14	खामोशियाँ की आवाज	खुर्शीद आलम अंसारी	32
15	कदम जो बढ़े विश्वास के साथ	शुभम कुमार	33
16	घर	आकांक्षा सिंह	33
17	कल, आज और कल	विकाश उपाध्याय	34
18	राजभाषा : हमारी पहचान	साहिल कुमार साव	35
19	रिकवरी की तैयारी	रौशन कुमार रस्तोगी	36

विविध

20	गुवाहाटी अंचल को प्राप्त राजभाषा पुरस्कार	2
21	राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह की झलकियां	3
22	30 सितंबर 2025 के अनुसार अंचल कार्यालय गुवाहाटी की कारोबार स्थिति	9
23	कलाकृतियाँ	37
24	विविध गतिविधियां	38
25	राजभाषा कार्यान्वयन	39
26	अंचल की अन्य गतिविधियां, स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियां	40-41
27	अखबारों में अंचल की गतिविधियां	42
28	हिंदी माह 2025 की झलकियां	43

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को सुनने के लिए QR कोड को अपने मोबाइल से स्कैन (गूगल लेंस) करें। यह QR कोड रचनाओं के हर पृष्ठ पर दिया गया है। बाई ओर दिये गए QR कोड को स्कैन करके आप अनुक्रम में दी गयी सभी रचनाओं को देख व सुन सकते है।

विनय कुमार
अंचल प्रमुख
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

अंचल प्रमुख का सन्देश

प्रिय साथियों,

'पीएनबी इन्द्रधनुष संवाद' के नवीनतम अंक के माध्यम से पुनः आप सबके साथ संवाद करने का अवसर प्राप्त करना हर्ष का विषय है। हम वित्तीय वर्ष 2025-26 के तृतीय तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं। आगामी महीनों में हमें समर्पित प्रयासों, सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली तथा समन्वित टीम भावना के साथ दिसंबर 2025 तथा मार्च 2026 के व्यवसायिक लक्ष्यों की पूर्ण प्राप्ति सुनिश्चित करनी है। इस दिशा में बैंक के तीन प्रमुख क्षेत्रों— जमा, अग्रिम तथा वसूली एवं परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार पर विशेष रूप से केंद्रित होना अत्यंत आवश्यक है।

जमा एवं ऋण में सतत और गुणात्मक वृद्धि हेतु हम सभी को ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण के साथ कार्य करते हुए हर एक स्टाफ सदस्य को समन्वित प्रयास करने होंगे। हमारे बैंक में ग्राहकों हेतु एक से बढ़कर एक उत्पाद मौजूद हैं, हमें आवश्यकता है इन उत्पादों का विपणन करते हुए ग्राहक की आवश्यकता के अनुसार उसके लिए सर्वश्रेष्ठ उत्पाद को उसे प्रदान करने की। साथ ही, बैंक के विविध डिजिटल समाधानों—जैसे पीएनबी वन, यूपीआई सेवाएँ, डिजिटल ऋण सुविधाएँ तथा ऑनलाइन खाता खोलने की प्रक्रिया के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं उपयोग को और गति प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है, जिनके माध्यम से हम ग्राहकों को त्वरित और सुविधाजनक तरीके से बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। वसूली के क्षेत्र में भी निर्धारित रणनीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन, नियमित फॉलो-अप तथा प्रत्येक खाते पर सतत निगरानी के माध्यम से बैंक की परिसंपत्ति गुणवत्ता को और सुदृढ़ बनाना आवश्यक है। हमारी समर्पित एवं योजनाबद्ध कार्यशैली के द्वारा ही हम मार्च 2026 के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

साथियों, मुझे यह उल्लेख करते हुए प्रसन्नता है कि अंचल कार्यालय गुवाहाटी तथा अधीनस्थ मंडलों द्वारा 14 सितंबर से 13 अक्टूबर तक आयोजित हिंदी माह का सफल आयोजन किया गया। इस अवधि में अंचल एवं मंडल स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर कार्यक्रम को अत्यंत सफल बनाया। मैं प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में सहभागिता करने वाले सभी स्टाफ सदस्यों को साधुवाद देता हूँ और साथ ही सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ। मेरा आग्रह है कि आगे भी आप सभी अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करते हुए अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करें और आगे भी इस प्रकार के आयोजनों में सक्रिय सहभागिता करें। हमें वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु प्रधान कार्यालय से 'लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड तृतीय पुरस्कार' प्राप्त हुआ है, जिसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। इस बार हमें और अधिक लगन और मेहनत से कार्य करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त करना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि एकता, तत्परता और टीम भावना के साथ हम सभी अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए आगामी महीनों में बैंक के सभी व्यवसायिक तथा राजभाषा लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे तथा अपनी शाखा, मंडल तथा अपने अंचल सहित सम्पूर्ण बैंक को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना योगदान देंगे।

विनय कुमार

(विनय कुमार)

"राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है।" - अवनींद्रकुमार विद्यालंकार।

पामु रोज कुमार
उप अंचल प्रमुख
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

उप अंचल प्रमुख का संदेश

पीएनबी परिवार के गुवाहाटी अंचल के सभी साथियों को मेरा नमस्कार। साथियों, वित्तीय वर्ष 2025-26 की प्रथम छमाही के परिणाम हमारी अपेक्षाओं के अनुसार नहीं रहे जिसके कारण हमारा दायित्व और अधिक बढ़ जाता है कि हम आगामी दोनों तिमाहियों में और अधिक मेहनत करते हुए मार्च 2026 के लक्ष्यों को प्राप्त करें। बदलते बैंकिंग परिदृश्य, प्रतिस्पर्धी बाजार और ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं के बीच हमें अपना कार्य न केवल तेज़ी से, बल्कि अधिक सटीकता और ज़िम्मेदारी के साथ करना होगा।

व्यवसाय वृद्धि के साथ-साथ अनुपालन (Compliance) आज हमारे संचालन की रीढ़ बन चुका है। यह केवल नियामकीय आवश्यकता ही नहीं, बल्कि भरोसे और पारदर्शिता की वह नींव है जिस पर ग्राहक का विश्वास टिका होता है। प्रत्येक शाखा, प्रत्येक विभाग और प्रत्येक अधिकारी को केवाईसी, एएमएल, जोखिम प्रबंधन तथा आंतरिक नीतियों के पालन में शत-प्रतिशत सावधानी बरतनी होगी। अनुपालन की छोटी-सी चूक भी न केवल संस्थान की छवि को प्रभावित करती है, बल्कि व्यवसाय की स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। अतः अनुपालन को हमारे रोज़मर्रा के कार्य का अभिन्न हिस्सा बनाना हम सभी की सामूहिक ज़िम्मेदारी है।

इसी प्रकार, साइबर सुरक्षा आज बैंकिंग क्षेत्र की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। डिजिटल लेनदेन में लगातार बढ़ोतरी के साथ साइबर जोखिम भी तेजी से बढ़ रहे हैं। हमें फिशिंग, स्मिशिंग, मालवेयर, अनधिकृत लेनदेन और डेटा चोरी, डिजिटल अरेस्ट जैसे खतरों के प्रति सदैव सतर्क रहना होगा। संवेदनशील जानकारी साझा न करना, सिस्टम का सुरक्षित उपयोग, मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन अपनाना और बैंक के साइबर सुरक्षा दिशा-निर्देशों का पालन करना न केवल हमारी सुरक्षा, बल्कि करोड़ों ग्राहकों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करता है। अपने ग्राहकों को भी साईबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करना हमारी जिम्मेदारी है।

मुझे विश्वास है कि हम सभी अपनी प्रतिबद्धता, दक्षता और टीम वर्क के माध्यम से व्यवसाय वृद्धि के लक्ष्यों को अनुपालन के साथ प्राप्त करते हुए गुवाहाटी अंचल को और ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं।

(पी रोज़ कुमार)

अनिल कुमार भगत
वरिष्ठ प्रबंधक – राजभाषा
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

संपादकीय

आदरणीय पाठकगण,

यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि सम्पूर्ण बैंक के साथ गुवाहाटी अंचल द्वारा भी 14 सितंबर से 13 अक्टूबर तक की अवधि को हिंदी माह के रूप में पूरे उत्साह, समर्पण और सक्रिय भागीदारी के साथ मनाया। हिंदी के प्रति यह आस्था और आदर न केवल संवैधानिक दायित्व की पूर्ति है, बल्कि यह हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और भाषाई एकता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। इस वर्ष, हिंदी माह के आयोजन में हमारे अंचल कार्यालय ने नेतृत्व करते हुए इसे अविस्मरणीय बना दिया। इस दौरान कुल आठ प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। हमें यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि बैंक के स्टाफ सदस्यों ने इन प्रतियोगिताओं में न केवल उत्साहपूर्वक भाग लिया, बल्कि अपनी रचनात्मकता और हिंदी भाषा पर अपनी पकड़ का शानदार प्रदर्शन भी किया। आप सभी की यह सक्रिय सहभागिता ही इस पूरे हिंदी माह की सबसे बड़ी सफलता रही है। आपकी भागीदारी ने इस आयोजन को केवल एक औपचारिकता न बनाकर, एक जीवंत और प्रेरणादायक अनुभव में बदल दिया।

इसी कड़ी में, हमें यह बताते हुए गर्व है कि हमारे सभी मंडल कार्यालयों ने भी हिंदी माह को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मंडल कार्यालयों के स्तर पर भी अनेक विविध कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए। इन सामूहिक प्रयासों से यह सिद्ध होता है कि पीएनबी में हिंदी केवल एक कामकाजी भाषा नहीं, बल्कि हमारे आपसी संवाद और प्रगति की सशक्त माध्यम है। हिंदी माह का यह सफल समापन मात्र एक विराम है, पूर्ण विराम नहीं। हम आशा करते हैं कि हिंदी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार की यह भावना साल भर बनी रहेगी।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि असम और संपूर्ण उत्तर पूर्व भारत जैसे भाषाई रूप से विविधतापूर्ण क्षेत्र में, हिंदी एक अत्यंत महत्वपूर्ण 'संयोजक भाषा' का कार्य करती है। यह भाषा विभिन्न स्थानीय भाषाओं और बोलियों को बोलने वाले हमारे स्टाफ सदस्यों और ग्राहकों के बीच सहज संवाद का एक मजबूत पुल बनाती है। हिंदी की यह भूमिका राष्ट्रीय एकता और समावेशी बैंकिंग के हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने में अमूल्य सहयोग देती है। यह हमें एक दूसरे की संस्कृति को समझने और सम्मान करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे हमारे कार्यक्षेत्र में सौहार्द और सहयोग का वातावरण बना रहता है।

इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं आदरणीय अंचल प्रबंधक महोदय, सभी वरिष्ठ अधिकारियों तथा संपादक मंडल का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके मार्गदर्शन और सहयोग के बिना इस पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं था। पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध और ज्ञानवर्धक बनाने के लिए अपने सभी स्टाफ सदस्यों से आग्रह करते हैं कि वे अपनी रचनाएँ, अनुभव, सफलता की कहानियाँ और विचार हमें अवश्य भेजें। आपकी सक्रिय सहभागिता ही हमारी पत्रिका को पीएनबी परिवार की सच्ची अभिव्यक्ति बनाएगी।

आइये, हम सब मिलकर हिंदी भाषा के सम्मान को बनाए रखें और इसे अपनी प्रगति और एकता का माध्यम बनाएं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

अनिल कुमार भगत

(अनिल कुमार भगत)

"हिंदी को तुरंत शिक्षा का माध्यम बनाइये।" - बेरिस कल्यएव।

अमित चेतिया
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

30 सितंबर 2025 के अनुसार

अंचल कार्यालय गुवाहाटी की कारोबार स्थिति

बिजनेस पैरामीटर	गुवाहाटी अंचल	अगरतला मंडल	डिब्रूगढ़ मंडल	गुवाहाटी मंडल	इंफाल मंडल	जोरहाट मंडल	नगांव मंडल	सिलचर मंडल
कुल व्यवसाय	54587	8602	7794	16987	4641	5068	6339	5156
कुल जमा	36011	6442	5580	10065	2760	3454	3874	3836
मूल जमा	33701	5990	5334	8661	2566	3454	3874	3822
चालू जमा	2466	404	309	1020	167	148	219	199
बचत जमा	17355	2883	2607	3650	1781	2079	2287	2068
कासा	19821	3286	2916	4670	1948	2227	2507	2267
कासा शेयर %	55%	51%	52%	46%	71%	64%	65%	59%
सावधि जमा	16190	3156	2664	5395	812	1226	1367	1570
अग्रिम	18576	2159	2214	6922	1881	1615	2465	1320
कुल खुदरा	7414	1077	987	1847	1490	704	885	423
कृषि (प्रा.क्षे.)	3062	299	519	622	144	467	605	406
एमएसएमई	5613	685	693	2114	242	436	960	482
आरएएम (कृषि एनपीए के अलावा)	16088	2061	2199	4582	1877	1607	2450	1312
एनपीए	1594	132	257	547	160	84	227	189
सीडी दर	52%	34%	40%	69%	68%	47%	64%	34%

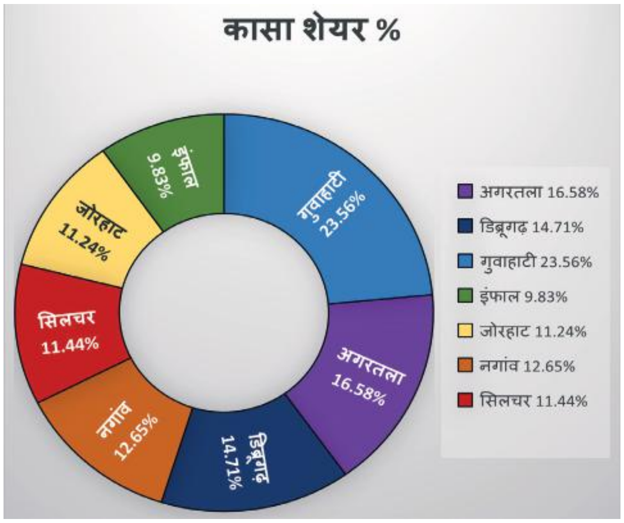

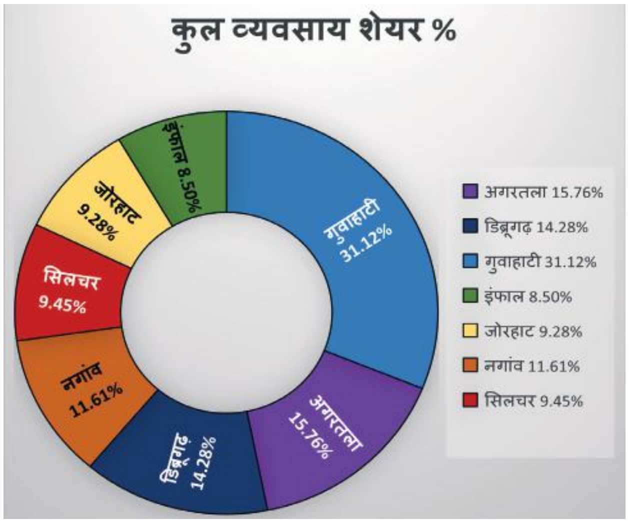

समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए अतिरिक्त टैरिफ का प्रभाव और विकल्प

उमंग अग्रवाल
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

जैसा कि हमें ज्ञात है कि अगस्त 2025 में, अमेरिका ने भारतीय आयात पर कुछ विशेष टैरिफ लगाए, जो कुछ सामानों पर 50% तक पहुंच गया। ये टैरिफ दो चरणों में पेश किए गए थे:

1 अगस्त, 2025 : भारतीय वस्तुओं की एक श्रृंखला पर प्रारंभिक 25% टैरिफ।

27 अगस्त, 2025 : अतिरिक्त 25% टैरिफ जोड़ा गया, जिससे कई उत्पादों के लिए कुल 50% हो गया।

यह कथित तौर पर भू-राजनीतिक तनाव के बीच रूसी तेल की भारत की निरंतर खरीद के लिए एक जुर्माना था। अगस्त 2025 में लगाए गए 50% तक के अमेरिकी टैरिफ के बाद, भारत को अपने निर्यात-उन्मुख क्षेत्रों, प्रतिस्पर्धात्मकता और अमेरिका के साथ समग्र व्यापार संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ा है। नए अमेरिकी टैरिफ का भारतीय अर्थव्यवस्था पर एक महत्वपूर्ण, हालांकि विनाशकारी प्रभाव नहीं पड़ा है, जो प्रमुख निर्यात क्षेत्रों को प्रभावित करता है और इसकी व्यापार रणनीति का पुनर्मूल्यांकन करता है। भारत पर अमेरिका के इस फैसले के समकालीन प्रभाव को हम निम्नानुसार देख सकते हैं:

आर्थिक प्रभाव

निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता : बढ़ी हुई ड्यूटी ने अमेरिकी बाजार में कई भारतीय उत्पादों को कम प्रतिस्पर्धी बना दिया है, जो $ 60 बिलियन से अधिक के निर्यात को प्रभावित करता है। वस्त्र, रत्न और आभूषण, चमड़े के सामान और समुद्री उत्पादों सहित उच्चतम टैरिफ वाले क्षेत्रों को सबसे अधिक नुकसान पहुंचा है।

मैक्रोइकॉनॉमिक प्रभाव : कुछ विश्लेषण के अनुसार,

"हिंदी हिंद की, हिंदियों की भाषा है।" - र. रा. दिवाकर।

टैरिफ भारत की समग्र जीडीपी वृद्धि को 0.3-0.9 प्रतिशत अंक कम कर सकते हैं, जिससे अर्थव्यवस्था की वसूली में संभावित मंदी आ सकती है। हालांकि, भारत की मजबूत घरेलू खपत से पूर्ण प्रभाव के खिलाफ बफर प्रदान करने की उम्मीद है।

लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) पर प्रभाव : एमएसएमई, जो वस्त्र और चमड़े जैसे भारत के श्रम-गहन निर्यात के लिए महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से कमजोर हैं। उन्हें वियतनाम और बांग्लादेश जैसे कम टैरिफ वाले देशों के प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ कम प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।

समुद्री उत्पाद : 50% से अधिक के टैरिफ भारत के झींगा निर्यात और कृषक समुदायों की आजीविका की लाभप्रदता को खतरे में डालते हैं।

निवेशक भावना : टैरिफ ने बाजार में अस्थिरता और अनिश्चितता पैदा कर दी है, जो संभावित रूप से विदेशी निवेश को प्रभावित कर रही है, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) अधिक सतर्क हो रहे हैं।

वित्तीय बाजार की अस्थिरता : टैरिफ ने भारतीय वित्तीय बाजारों में अस्थिरता में वृद्धि में योगदान दिया है, जिसमें अपतटीय बाजारों में रुपये का कमजोर होना और सार्वजनिक रूप से कारोबार करने वाली कंपनियों के लिए आय में गिरावट शामिल है।

क्षेत्र-विशिष्ट प्रभाव :

कमजोर क्षेत्र : कपड़ा, कालीन और रत्न और आभूषण जैसे श्रम-गहन उद्योगों पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है, कुछ विश्लेषकों ने महत्वपूर्ण नौकरी के नुकसान और कारखाने के बंद होने की भविष्यवाणी की है।

लचीला क्षेत्र : फार्मास्यूटिकल्स और कुछ उच्च मूल्य वाले इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों को टैरिफ से छूट दी गई है, भारत के निर्यात के एक महत्वपूर्ण हिस्से की रक्षा की गई है और उन्हें तत्काल झटके से बचाया गया है। हालांकि शुरुआत में छूट देते हुए, ये महत्वपूर्ण क्षेत्र भविष्य के कर्तव्यों के जोखिम में बने रहते हैं, जिससे दीर्घकालिक अनिश्चितता पैदा होती है।

भू-राजनीतिक और राजनयिक प्रभाव

फ्रैक्चर्ड ट्रस्ट : अमेरिका द्वारा लगाए गए इस टैरिफ ने दशकों से निर्मित राजनयिक विश्वास को नष्ट कर दिया है। कुछ विश्लेषक इसे अमेरिका-भारत संबंधों के "दो दशकों में सबसे खराब संकट" के रूप में वर्णित करते हैं।

रणनीतिक स्वायत्तता पर दबाव : टैरिफ व्यापार नीति को भू-

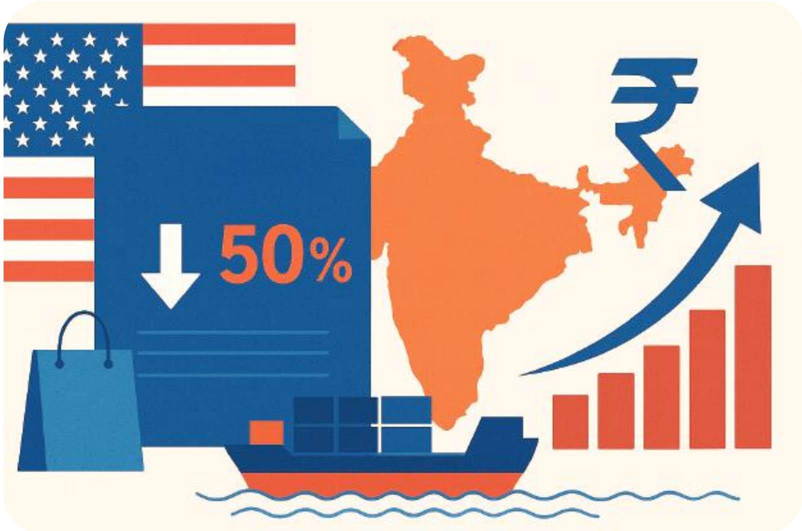

राजनीतिक रुख से जोड़ते हैं, विशेष रूप से भारत की रूसी तेल खरीद को लक्षित करते हैं। यह भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और एक स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखने की उसकी क्षमता पर दबाव डालता है।

इन चुनौतियों का सामना करते हुए, भारत ने तत्काल प्रतिशोध शुल्क के बजाय एक बहु-आयामी रणनीतिक दृष्टिकोण का विकल्प चुना है।

राजनयिक रणनीति

निंदा और बातचीत : विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर ने सार्वजनिक रूप से टैरिफ को अनुचित एवं अन्यायसंगत कहा, जबकि दोनों देशों को बातचीत के माध्यम से "लैंडिंग ग्राउंड" खोजने की आवश्यकता पर जोर दिया।

फर्म "रेड लाइन" : भारत ने संकेत दिया है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर समझौता नहीं करेगा, जैसे कि अपने कृषि और डेयरी क्षेत्रों को बाजार पहुंच की अमेरिकी मांगों से बचाना।

दोहरे मानकों पर प्रकाश डालते हुए : भारतीय अधिकारियों ने बताया है कि अमेरिका और यूरोपीय संघ भारत को मंजूरी देते समय रूस के साथ व्यापार संबंध जारी रखते हैं, जो अमेरिकी स्थिति के पाखंड को रेखांकित करते हैं।

आर्थिक रणनीति

विविध बाजार : भारतीय निर्यातक अमेरिका पर निर्भरता कम करने के लिए सक्रिय रूप से नए बाजारों की खोज कर रहे हैं। ब्रिटेन के साथ बाहरी दिखने वाले व्यापार समझौते और यूरोपीय संघ और अन्य भागीदारों के साथ चल रही बातचीत इस रणनीति का हिस्सा है।

घरेलू बाजार को मजबूत करना : भारत सरकार "वोकल फॉर लोकल" जैसी पहलों के माध्यम से घरेलू लचीलेपन को बढ़ावा दे रही है, नागरिकों को बाहरी झटकों से अर्थव्यवस्था को सहारा प्रदान करने के लिए स्थानीय सामान खरीदने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

उद्योग समर्थन : सरकार प्रभावित क्षेत्रों में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) का समर्थन करने के लिए ऋण गारंटी और निर्यात बीमा जैसे लक्षित वित्तीय हस्तक्षेपों की खोज कर रही है।

रिशेपिंग सप्लाई चेन : टैरिफ ने भारत के लिए अपनी औद्योगिक क्षमताओं को बढ़ाने और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में अपनी स्थिति में सुधार के दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ अपनी सोर्सिंग में विविधता लाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया हैं।

हालांकि अक्टूबर 2025 तक, सिर्फ औपचारिक समाधान को ध्यान मैं रखते हुए बातचीत चल रही है। स्थिति भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और आर्थिक लचीलेपन का एक परीक्षण बनी हुई है, जो इसे रणनीतिक समायोजन करने के लिए प्रेरित करती है जो आने वाले वर्षों के लिए अपनी व्यापार नीति को आकार देगी।

"नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है।" - गोपाललाल खत्री।

एक्ट ईस्ट नीति और इसके दूरगामी परिणाम

देबज्योति कर्माकर
अधिकारी
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

भारत की विदेश नीति में "एक्ट ईस्ट नीति" एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत बनाना है। इस नीति की शुरुआत साल 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की थी। इससे पहले भारत ने "लुक ईस्ट नीति" के नाम से इसी दिशा में कदम उठाया था, जिसे 1990 के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंहा राव ने शुरू किया था। लुक ईस्ट नीति का मकसद दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से जुड़ना था, जबकि एक्ट ईस्ट नीति का उद्देश्य इन संबंधों को और गहराई से विकसित करना और उन्हें व्यवहार में लाना है।

एक्ट ईस्ट नीति का मुख्य लक्ष्य भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया के देशों के साथ न केवल आर्थिक बल्कि सामरिक साझेदारी में भी जोड़ना है। यह नीति आसियान देशों-ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, और वियतनाम के साथ भारत के बहुआयामी सहयोग को मजबूत करती है। इन देशों के साथ भारत का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रिश्ता बहुत पुराना है। बौद्ध धर्म, व्यापार और संस्कृति के माध्यम से भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच हज़ारों सालों से संबंध बने हुए हैं। इसलिए एक्ट ईस्ट नीति न केवल एक आर्थिक रणनीति है, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण और क्षेत्रीय सहयोग का भी प्रतीक है।

इस नीति के तहत भारत ने संयोजकता यानी संपर्क को सबसे ज्यादा महत्व दिया है। सड़क, रेल, वायु और जलमार्ग के जरिए भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को दक्षिण-पूर्व एशिया से

जोड़ने की कोशिश की जा रही है। इनमें सबसे उल्लेखनीय है "भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग", जो पूर्वोत्तर भारत के इम्फाल से म्यांमार होते हुए थाईलैंड के बैंकॉक तक जाएगी। इसी तरह "कलादान मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट" मिजोरम राज्य को म्यांमार के सितवे बंदरगाह से जोड़ता है। इन परियोजनाओं के पूरा होने से पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया के बंदरगाहों और बाजारों तक सीधी पहुँच मिलेगी। इससे न केवल व्यापार बढ़ेगा बल्कि इस क्षेत्र में नए रोजगार और विकास के अवसर भी पैदा होंगे।

पूर्वोत्तर भारत इस नीति का केंद्र है। यह क्षेत्र भौगोलिक रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया के करीब है और भारत के लिए "गेटवे टू साउथ ईस्ट एशिया" यानी प्रवेश द्वार का काम करता है। एक्ट ईस्ट नीति के माध्यम से केंद्र सरकार का उद्देश्य इस क्षेत्र को आर्थिक और रणनीतिक दृष्टि से सशक्त बनाना है। जब पूर्वोत्तर के शहर और राज्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार और परिवहन नेटवर्क से जुड़ेंगे, तो वहाँ उद्योग, पर्यटन और शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होगी। इससे स्थानीय लोगों का जीवनस्तर बेहतर होगा और भारत की एकता और अखंडता और मजबूत होगी।

आर्थिक दृष्टि से भी एक्ट ईस्ट नीति बहुत उपयोगी है। आसियान देश विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में से हैं। भारत ने इन देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौता किया है, जिससे वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार आसान हुआ है। भारत अब इन देशों को अपने निर्यात का बड़ा हिस्सा भेजता है -खासकर दवाइयाँ, मशीनरी, वस्त्र, रसायन और कृषि उत्पाद। इसके साथ ही, दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से निवेश भी भारत में आ रहा है। यह नीति "मेक इन इंडिया", "डिजिटल इंडिया" और "स्टार्ट-अप इंडिया" जैसी योजनाओं को भी आगे बढ़ाने में मदद करती है, क्योंकि इनसे विदेशी निवेश को प्रोत्साहन मिलता है।

सिर्फ आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सुरक्षा और रणनीतिक दृष्टि से भी यह नीति महत्वपूर्ण है। दक्षिण चीन सागर में चीन के बढ़ते प्रभाव और एशिया-प्रशांत क्षेत्र में बदलते शक्ति-संतुलन को देखते हुए भारत अपने साझेदार देशों जैसे जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और वियतनाम के साथ मिलकर काम कर रहा है। यह सहयोग "क्वाड" जैसे समूहों के माध्यम से होता है, जो मुक्त और खुला इंडो-पैसिफिक क्षेत्र सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं। एक्ट ईस्ट नीति भारत को इस क्षेत्र में एक जिम्मेदार और सक्रिय शक्ति के रूप में स्थापित करती है।

सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह नीति बहुत गहरी है। भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के बीच बौद्ध धर्म, कला, संगीत, नृत्य, वास्तुकला और परंपराओं का अद्भुत संबंध है। इन देशों में भारत के प्राचीन प्रभाव आज भी देखे जा सकते हैं। इस सांस्कृतिक जुड़ाव को फिर से मजबूत करने के लिए भारत ने विभिन्न सांस्कृतिक और शैक्षणिक कार्यक्रम शुरू

किए हैं। आसियान देशों के विद्यार्थियों को भारत में पढ़ाई के लिए छात्रवृत्तियाँ दी जा रही हैं, साथ ही पर्यटन और जन-से-जन संपर्क को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे भारत की "सॉफ्ट पावर" यानी सांस्कृतिक प्रभावशीलता भी बढ़ रही है।

हालांकि, इस नीति के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। म्यांमार में राजनीतिक अस्थिरता, सीमाई सुरक्षा, बुनियादी ढाँचे की कमी और परियोजनाओं में देरी जैसी समस्याएँ इस नीति की गति को प्रभावित करती हैं। भारत को पूर्वोत्तर राज्यों में बुनियादी सुविधाओं—जैसे सड़क, बिजली, स्वास्थ्य और शिक्षा—को मजबूत करना होगा ताकि यह क्षेत्र विदेशी व्यापार के लिए तैयार हो सके। इसके साथ ही स्थानीय लोगों को भी इन योजनाओं का भागीदार बनाना ज़रूरी है, ताकि विकास स्थायी और सर्वसमावेशी हो।

भविष्य की दृष्टि से देखा जाए तो एक्ट ईस्ट नीति के दूरगामी परिणाम बहुत सकारात्मक हो सकते हैं। यह नीति भारत को न केवल दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ती है बल्कि एशिया की नई आर्थिक और रणनीतिक संरचना में भारत को केंद्रीय भूमिका प्रदान करती है। जब भारत अपने पूर्वी पड़ोसी देशों के साथ व्यापार, निवेश, शिक्षा, पर्यटन और सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाएगा, तो इसका सीधा लाभ भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज को मिलेगा। पूर्वोत्तर राज्यों में औद्योगिक विकास, युवाओं के लिए रोजगार, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसी गतिविधियाँ इस नीति की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ होंगी।

भविष्य में एक्ट ईस्ट नीति भारत को एक "ब्रिज नेशन" यानी सेतु राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकती है, जो दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच संपर्क का केंद्र बनेगा। इससे भारत की वैश्विक स्थिति और भी मजबूत होगी और देश "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना के साथ एशिया में शांति, सहयोग और विकास का वाहक बन सकेगा।

अंततः, एक्ट ईस्ट नीति केवल विदेश नीति का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह भारत के समग्र विकास की दिशा में एक दीर्घकालिक रणनीति है। यह नीति भारत को आर्थिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक रूप से एक सशक्त एशियाई शक्ति के रूप में उभरने का अवसर देती है। यदि भारत इस नीति को प्रभावी रूप से लागू कर पाता है, तो इसके दूरगामी परिणाम न केवल भारत के लिए बल्कि पूरे एशिया के लिए लाभदायक होंगे। इससे भारत की अंतरराष्ट्रीय पहचान और भूमिका और अधिक सशक्त होगी तथा "नए भारत" की

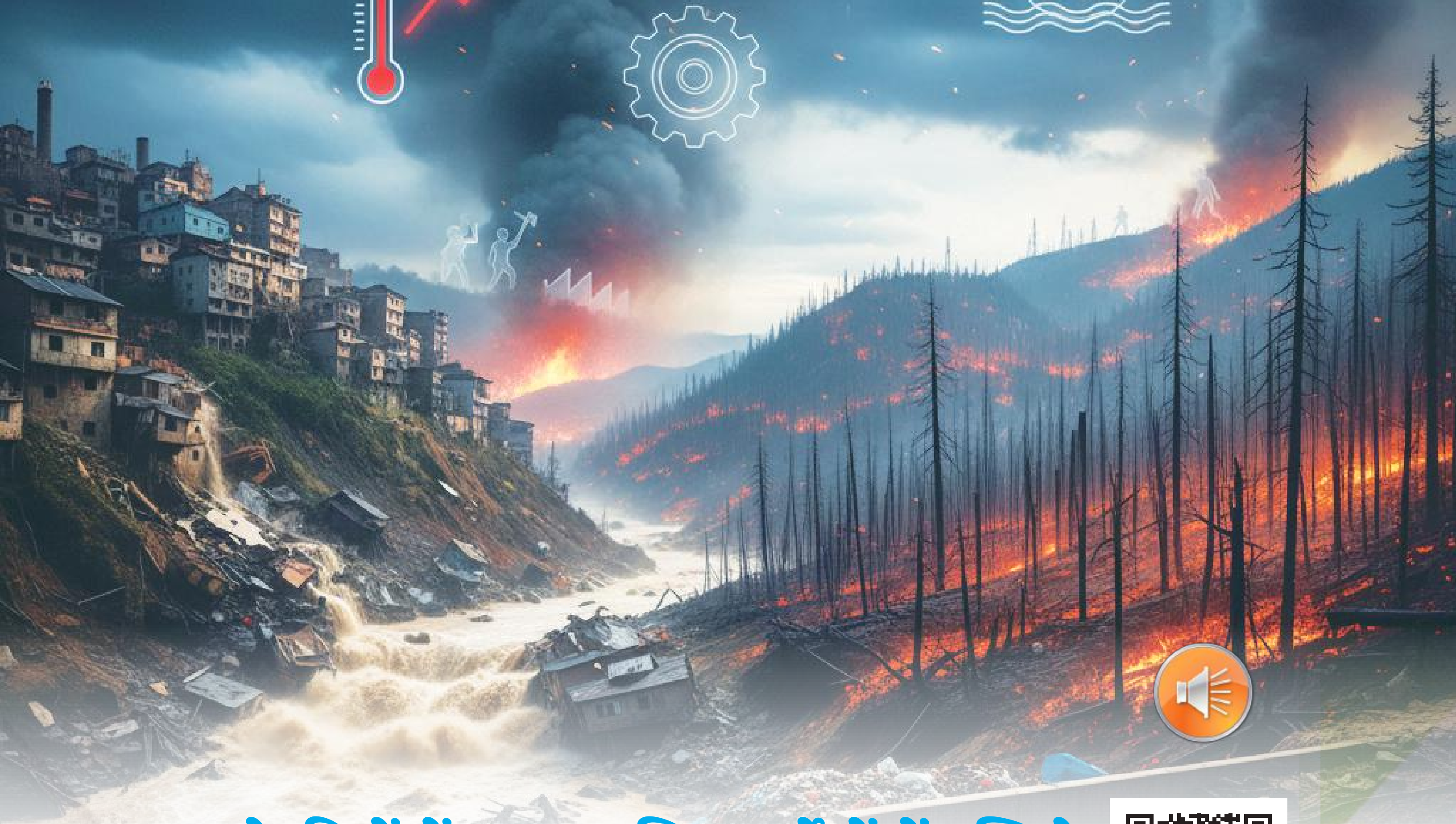

हाल के दिनों में हुए प्राकृतिक दुर्योगों में वृद्धि के कारण और भविष्य में इनसे बचने के उपाय

देवकर्ण सिंह
सहायक महा प्रबंधक
सरकारी व्यवसाय केंद्र, अगरतला

प्राकृतिक आपदाएँ हमेशा से मानव सभ्यता के इतिहास का हिस्सा रही हैं। कभी भूकंप, कभी बाढ़, कभी सूखा तो कभी चक्रवात - ये घटनाएँ मानव जीवन और पर्यावरण को गहरे स्तर पर प्रभावित करती रही हैं। परंतु हाल के कुछ वर्षों में इन आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता दोनों में तेजी से वृद्धि देखने को मिली है। जिस प्रकार भारत समेत पूरे विश्व में अचानक आई बाढ़, अनियमित वर्षा, समुद्री तूफान, भूकंप, जंगलों में आग और भूस्खलन जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं, उससे स्पष्ट होता है कि यह केवल प्राकृतिक चक्र नहीं, बल्कि मानवीय गतिविधियों का भी प्रत्यक्ष परिणाम है। आइये इसे हम और विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं:-

प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि के प्रमुख कारण

प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि के कई कारण हैं; यहाँ हम कुछ मुख्य कारणों की चर्चा करना चाहेंगे।

1. जलवायु परिवर्तन : जलवायु परिवर्तन को प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि का एक प्रमुख कारण माना जाता है। हम सभी इस बात से अवगत हैं कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण मौसम के पैटर्न में बदलाव हो रहा है। औद्योगीकरण, प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन ने वातावरण का संतुलन बिगाड़ दिया है। इसके कारण समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं और मौसम का स्वरूप असामान्य हो गया है। यही कारण है कि कहीं अत्यधिक वर्षा हो रही है तो कहीं लंबा सूखा पड़ रहा है।

2. वनों की अंधाधुंध कटाई : जंगल प्राकृतिक आपदाओं से रक्षा करने की ढाल हैं। वे वर्षा को नियंत्रित करते हैं, मिट्टी का कटाव रोकते हैं और तापमान संतुलित रखते हैं।

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।" - कमलापति त्रिपाठी।

मानव की अनियोजित गतिविधियों जैसे कि वनों की कटाई, शहरीकरण और औद्योगीकरण ने प्राकृतिक असंतुलन को जन्म दिया है। वनों की कटाई से मृदा अपरदन बढ़ता है और बाढ़ की संभावना बढ़ जाती है। यही कारण है कि आज भूस्खलन और बाढ़ जैसी घटनाएँ अधिक देखने को मिलती हैं।

3. अनियोजित शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि : बढ़ती जनसंख्या और अनियोजित शहरीकरण ने लोगों को अधिक जोखिम वाले क्षेत्रों में बसने के लिए प्रेरित किया है, जैसे कि पहाड़ी क्षेत्रों में, नदी के किनारे या तटीय क्षेत्रों में, जो उन्हें प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। शहरों का विस्तार बिना योजनाओं के हो रहा है। इससे प्राकृतिक आपदाओं के समय नुकसान अधिक होता है। जनसंख्या का दबाव संसाधनों पर बढ़ने से प्रकृति के साथ टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है।

4. औद्योगिक गतिविधियाँ और प्रदूषण : भारी मात्रा में प्रदूषण, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग और रसायनों का निकास प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। प्रदूषण न केवल हवा और पानी को खराब करता है, बल्कि वैश्विक ऊष्मीकरण को भी तेज करता है; जो अंततः ग्लैशियरों को पिघलने में मदद करता है और आपदाओं को आमंत्रित करता है।

5. प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन : खनन, जल का अत्यधिक दोहन और भूमि का अतिक्रमण प्रकृति की स्वाभाविक क्षमता को क्षीण कर रहा है। यही कारण है कि अब छोटी-सी असंतुलित गतिविधि भी बड़ी आपदा का रूप ले लेती है।

6. भौगोलिक और भूगर्भिक कारक : कुछ क्षेत्रों में भौगोलिक और भूगर्भिक स्थितियाँ प्राकृतिक आपदाओं को बढ़ावा देती हैं, जैसे कि भूकंप प्रवण क्षेत्र या बाढ़ संभावित नदी बेसिन।

हाल के उदाहरण

पिछले कुछ वर्षों में हमने उत्तराखंड की केदारनाथ त्रासदी, केरल और असम की बाढ़, ओडिशा में आए फानी चक्रवात, महाराष्ट्र और हिमाचल में भूस्खलन तथा ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में जंगलों की आग जैसी घटनाएँ देखीं। ये घटनाएँ केवल प्राकृतिक नहीं थीं, बल्कि इनमें मानवीय लापरवाही और पर्यावरणीय असंतुलन की बड़ी भूमिका रही। अभी हाल में ही उत्तराखंड में धराली नामक कसबे में जो कुछ हुआ वह हम सबके सामने है। एक सैलाब ऊपर से आया और पूरे इलाके को अपने साथ बहा ले गया।

प्राकृतिक आपदाओं के परिणाम

प्राकृतिक आपदाएँ केवल भौतिक क्षति नहीं पहुँचातीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक ढाँचे को भी हिला देती हैं। लाखों लोग विस्थापित हो जाते हैं। कृषि भूमि और फसलें नष्ट हो जाती हैं। उद्योग-धंधे और व्यापार पर असर पड़ता है। लोगों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जानमाल की अपार क्षति होती है। प्राकृतिक आपदाओं से क्षतिग्रस्त इलाके की अर्थव्यवस्था चौपट हो जाती है।

भविष्य में बचाव के उपाय

1. पर्यावरण संरक्षण और वनीकरण : सबसे पहला कदम प्रकृति को उसकी मूल अवस्था में लौटाने का होना चाहिए। अधिक से अधिक वृक्षारोपण और वनों का संरक्षण आपदाओं को काफी हद तक कम कर सकता है।

2. नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग : कोयला, पेट्रोल और डीज़ल के स्थान पर सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए। इससे प्रदूषण कम होगा और जलवायु परिवर्तन की गति धीमी होगी।

3. आपदा प्रबंधन तंत्र को मजबूत करना : सरकार को आपदा प्रबंधन के लिए आधुनिक तकनीक और त्वरित राहत दल तैयार रखने चाहिए। समय रहते चेतावनी प्रणाली, रेस्क्यू ऑपरेशन और सुरक्षित आश्रय स्थलों की व्यवस्था होनी चाहिए।

4. जनजागरूकता : केवल सरकार के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। आम नागरिकों को भी पर्यावरण के महत्व और आपदा प्रबंधन के उपायों के बारे में शिक्षित करना होगा। स्कूल स्तर से ही बच्चों को आपदा प्रबंधन और प्रकृति संरक्षण की शिक्षा दी जानी चाहिए।

5. अनियोजित शहरीकरण पर नियंत्रण : नदियों के किनारे और पहाड़ी ढलानों पर निर्माण पर रोक लगानी होगी। शहरों का विस्तार योजनाबद्ध तरीके से होना चाहिए ताकि बाढ़ और भूकंप जैसी आपदाओं से बचाव संभव हो सके।

6. वैज्ञानिक शोध और तकनीकी विकास : आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके हम आपदाओं की भविष्यवाणी और उनके प्रभाव को कम कर सकते हैं। भूकंपरोधी भवन, जल निकासी प्रणाली, उपग्रह आधारित पूर्वानुमान प्रणाली और आपदा प्रबंधन ऐप्स अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। नदियों को आपस में जोड़कर बाढ़ जनित दुर्योगों को काफी हद तक रोका जा है।

निष्कर्ष : प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाएँ हमें चेतावनी देती हैं कि यदि हमने अभी भी प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं किया, तो आने वाले समय में स्थिति और भी भयावह होगी। हमें यह समझना होगा कि प्रकृति का संतुलन बिगाड़कर मानव अपने ही अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है। यदि समय रहते हम पर्यावरण संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग, आपदा प्रबंधन और जनजागरूकता की दिशा में ठोस कदम उठाएँ, तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और संतुलित जीवन संभव हो सकेगा।

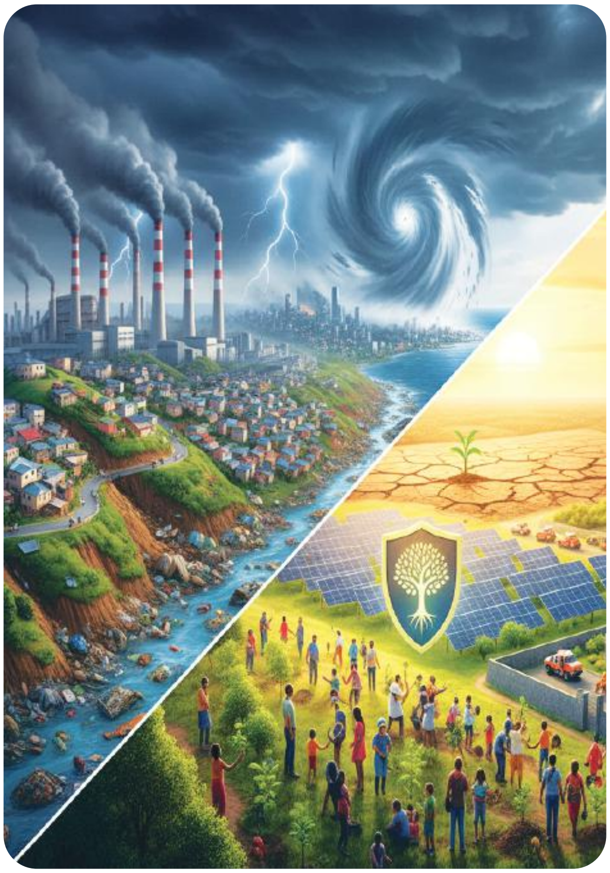

पूजा चौधरी
राजभाषा अधिकारी
मंडल कार्यालय, डिब्रूगढ़

दो मोमबत्तियां- एक जीवन दर्शन की कहानी

कहानी एक पुराने, शांत और अँधेरे कमरे से शुरू होती है। यह कमरा वर्षों से किसी पुराने घर के कोने में बंद था। धूल, मकड़ी के जाले, और हल्की-सी सीलन की गंध ... लेकिन उस कमरे में एक छोटी सी अलमारी थी, जिसमें मोमबत्तियां रखी थीं। उस अलमारी के उपरी खाने में, दो सुंदर मोमबत्तियां रखी थीं। एक चमकदार सफ़ेद रंग की, बिलकुल सीधी और नई, जिसकी सतह पर हल्की सी खुशबु बसी थी। दूसरी हल्के पीले रंग की, थोड़ी मोटी, लेकिन उतनी ही सुंदर।

शाम ढल रही थी। बाहर से कुछ आवाजें आ रही थीं – घर के लोग नीचे इकठ्ठा हो रहे थे, क्योंकि बिजली चली गई थी और चारों तरफ अँधेरा फैल चुका था। किसी ने अलमारी खोली और दोनों मोमबत्तियों को बाहर निकालकर टेबल पर रख दिया।

जैसे ही लोग बाहर चले गए, दोनों मोमबत्तियों के बीच बातचीत शुरू हो गई।

पहली मोमबत्ती(सफ़ेद) – "आशा है, आज मुझे जलाया नहीं जाएगा। देखो न, मैं कितनी सुंदर और नई हूँ। मैं नहीं चाहती कि मेरा आकार बिगड़ जाए या मैं ख़त्म हो जाऊं।"

दूसरी मोमबत्ती (पीली) मुस्कुराते हुए बोली — "तुम्हें पता है, मोमबत्ती का असली मकसद जलना ही है। अगर हम नहीं जलेंगे, तो इस अँधेरे कमरे में बैठे लोग क्या करेंगे? वे ठोकर खा सकते हैं, डर सकते हैं।

पहली थोड़ी चिढ़कर बोली – " लेकिन सोचो, अगर मैं जल गई, तो मैं पिघल जाऊँगी, छोटी हो जाऊँगी, और अंत में मेरा कोई नामोनिशान नहीं बचेगा। मैं हमेशा के लिए ख़त्म हो जाऊँगी।"

दूसरी ने गहरी सांस ली और कहा — "हाँ, हम पिघलते हैं, ख़त्म होते हैं, लेकिन उस पिघलने में ही हमारी असली जीत

है। क्योंकि जब हम जलते हैं, हम दूसरों के लिए रोशनी लाते हैं। हमारा अस्तित्व दूसरों के जीवन में उजाला करने के लिए है, न कि सिर्फ अलमारी में पड़े रहने के लिए।"

तभी एक बच्ची कमरे में आई। उसने दोनों मोमबत्तियां उठाई और माचिस ढूंढने लगी।

पहली मोमबत्ती डर के मारे मन ही मन कहने लगी – "हे भगवान बस मुझे मत जलाना।"

लेकिन बच्ची ने माचिस जलाई और सबसे पहले दूसरी मोमबत्ती को आग लगा दी। तुरंत कमरे में हल्की पीली रोशनी फैल गई। अँधेरे कोनों में भी कुछ-कुछ नजर आने लगा।

दूसरी मोमबत्ती धीरे धीरे जलने लगी। उसका मोम पिघलकर नीचे गिर रहा था, लेकिन उसके चेहरे पर (अगर मोमबत्ती के चेहरे होते) संतोष की मुस्कान थी।

दूसरी मोमबत्ती ने धीरे से पहली से कहा - "देखो, यह रोशनी कितनी प्यारी है। यह सिर्फ मेरे लिए नहीं है, बल्कि यह मौजूद हर किसी के लिए है। लोग अब इधर-उधर टकराएंगे नहीं, वे काम कर पाएंगे और उनका डर भी कम हो जाएगा"

पहली मोमबत्ती खामोश रही,लेकिन मन में सोच रही थी – "सच है...यह तो अच्छा लग रहा है... लेकिन मैं अब भी नहीं चाहती ख़त्म हो जाऊ।

रात बीतती रही। दूसरी मोमबत्ती आधी से भी कम बची, लेकिन कमरे में रोशनी लगातार बनी रही। बाहर लोग बात कर रहे थे, बच्चे खेल रहे थे - ये सब सिर्फ इसलिए संभव था क्योंकि एक मोमबत्ती ने खुद को जलाने का साहस किया।

आधी रात को बिजली आ गई। लोग दूसरी मोमबत्ती को बुझाकर अलमारी में रख गए। वह थक चुकी थी, लेकिन उसके चेहरे पर शांति थी।

पहली मोमबत्ती अब भी पूरी की पूरी वैसी ही थी, लेकिन उसके मन में एक अजीब सा खालीपन था।

अगले कुछ दिनों में कई बार बिजली गई, और हर बार दूसरी मोमबत्ती को जलाया गया। वो हर बार जलती, पिघलती और उजाला देती रही। धीरे- धीरे उसका आकार छोटा होता गया... और एक दिन,वो पूरी तरह ख़त्म हो गई।

उस दिन, अलमारी में सिर्फ पहली मोमबत्ती बची थी – वही जो हमेशा खुद को बचाती रही। लेकिन अब वह अकेली थी, और कमरे के लोग उसे भूल चुके थे, क्योंकि उनके लिए रोशनी देने वाली मोमबत्ती की यादें ही सबसे ज्यादा मायने रखती थी

पहली मोमबत्ती ने मन ही मन सोचा – "काश ! मैं भी कभी जलती, दूसरों को रोशनी देती...शायद तब मुझे भी याद किया जाता है।

सीख

हमारा जीवन भी इन मोमबत्तियों जैसा है। अगर हम सिर्फ खुद को बचाने में लगे रहें, तो शायद हम लम्बा जी लें, लेकिन वो जीवन अधूरा होगा। वहीं, अगर हम अपने समय, उर्जा और क्षमताओं का उपयोग दूसरों की भलाई में करें, तो भले ही हमारा समय कम हो, लेकिन हमारा असर लम्बे समय तक रहेगा।

जीवन का असली अर्थ "सिर्फ जीना" नहीं, बल्कि "किसी के लिए जीना" है। खुद को बचाने के बजाय, खुद को जलाने का साहस रखो - क्योंकि असली रोशनी तभी फैलती है।

कृत्रिम बुद्धिमता के युग में राजभाषा हिंदी का महत्त्व

हेमंगा पाठक
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय, नगांव

कृत्रिम बुद्धिमता के युग में हिंदी का महत्त्व एक दोधारी तलवार के जैसा है। एक ओर, ए.आई. तकनीक हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और पहुँच का अभूतपूर्व विस्तार कर सकती है, वहीं दूसरी ओर, यदि पर्याप्त डेटा और संसाधनों का अभाव हो तो यह भाषा के लिए एक चुनौती भी बन सकती है। कृत्रिम बुद्धिमता कंप्यूटर साइंस का सब-डिविजन है और इसकी जडें पूरी तरह से कम्प्यूटिंग सिस्टम पर आधारित है। इसका अंतिम लक्ष्य ऐसे उपकरणों का निर्माण करना है जो बुद्धिमानी से और स्वतंत्र रूप से कार्य कर सके और मानव श्रम को कम कर सके। हिंदी भाषा साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान, विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में सक्षम भाषा है। इस पहल में हिंदी भी साथ चल रही है। हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य घटित हो रहा है। ध्वनि प्रसंस्करण कि बदौलत वाक् से पाठ और पाठ से वाक् प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो गयी है।

हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और बहुत कुछ अभी शेष हैं। कृत्रिम बुद्धिमता हिंदी भाषा के लिए नए रास्ते खोल सकती है और अस्तित्व को सुरक्षित रखने में योगदान दे सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिंपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जायेंगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते हैं तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह है कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओँ की दूरियां समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त हैं और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती हैं। हमारा

हिंदी साहित्य रामायण, महाभारत, वेद, पुराण, उपनिषद जैसे ग्रन्थ, आयुर्वेद-योग जैसी ज्ञान सम्पदा आदि दुनिया भर में गैर हिंदी पाठकों तक पहुँच सकती है।

आज के ए.आई. युग में हिंदी सिर्फ संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि एक बड़ा बाज़ार है। भारत में इंटरनेट का उपयोग करने वाली आबादी का एक बड़ा हिस्सा हिंदीभाषी है। इस वर्ग तक पहुँचने के लिए कंपनियों को हिंदी में अपनी सेवाओं को उपलब्ध कराना आवश्यक है। ई-कॉमर्स कंपनियां जैसे अमेजन और फ्लिप्कार्ट हिंदी में अपनी सेवाएं प्रदान करके ग्राहकों की संख्या बढ़ा रही हैं। हिंदी केन्द्रित ए.आई. मॉडल, जैसे कि नंदा, ई-कॉमर्स और ग्राहक सहायता में क्रान्ति ला सकते हैं, जिससे हिंदी भाषी उपभोक्ताओं को बेहतर अनुभव मिलेगा। ए.आई. हिंदी में सामग्री निर्माण को और भी आसान बना सकता है। जैसे कि स्वचालित अनुवाद और उपशीर्षक। यह हिंदी सामग्री के प्रसार को बढ़ावा देगा और नए रचनाकारों के लिए अवसर पैदा करेगा।

हिंदी में ए.आई. के विकास से भारतीय भाषाओं की समृद्ध विरासत को संरक्षित किया जा सकता है। यह केवल शब्दों के अनुवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा की बारीकियों, मुहावरों और सांस्कृतिक सन्दर्भों को भी समझने की क्षमता प्रदान करता है। कई स्टार्टअप और शोध संस्थानों, जैसे कि आई आई टी मद्रास के ए. आई. 4 भारत ने भारतीय भाषाओं के लिए ओपन-सोर्स डेटासेट और मॉडलों का विकास शुरू कर दिया है, जो इस क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान विकसित होंगे।

हिंदी में एआई आधारित शिक्षण उपकरण और प्लेटफ़ॉर्म छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। यह न केवल शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाता है, बल्कि उन लोगों के लिए भी अवसरों का विस्तार करता है जो अंग्रेजी में सहज नहीं है। ए आई संचालित उपकरण व्यक्तिगत सीखने के अनुभव प्रदान कर सकते हैं, जिससे प्रत्येक छात्र अपनी गति और शैली के अनुसार सीख सकता है। ए आई अब हिंदी वायस कमांड को पहचानकर उपकरणों के साथ संवाद को सरल बना रहा है।

इस तकनीकी दौर में हिंदी कंटेंट लिखने और वीडियो बनाने वालों की तादाद भी लाखों में है। बड़ी तादाद में कंटेंट क्रियेटर ए आई टूलों का इस्तेमाल करके अपनी पटकथा लिख रहे हैं और अपने वीडियो बना रहे हैं। इससे उनकी कमाई हो रही है और डिजिटल प्लेटफोर्मों पर हिंदी की मौजूदगी बढ़ रही है। हिंदी समाज में इस तरह की तकनीकी उपलब्धियों को गिनाने और उन पर प्रसन्न होने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

हाल में जी-20 सम्मलेन में उपस्थित अमेरिकी अधिकारी मार्गरेट मैक्लियोर्ड ने फर्राटेदार हिंदी में बात करके सबको चौंका दिया था। यही कारण है कि ए आई तकनीक में भी अब हिंदी का प्रयोग होने लगा है।

प्रतिस्पर्धा एवं प्रतियोगिता पर आधारित विश्व की व्यवस्था को समावेशन और सह अस्तित्व पर आधारित वैकल्पिक दृष्टि प्रदान करने में हिंदी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारी भाषा हिंदी निरंतर अपने दौर की तकनीक से जुडी रहे, बाज़ार के साथ जुड़ी रहे। साथ ही डिजिटल पीढ़ी के लिए हिंदी भाषा सीखने में भी ए आई का उपयोग बहुत फायदेमंद होगा। हम यह कह सकते हैं कि ए आई युग में हिंदी का भविष्य उज्जवल है।

सकारात्मक पहलुओं के बावजूद, ए आई हिंदी के लिए कुछ चुनौतियाँ भी पेश करता है। डेटा की कमी, तकनीकी पूर्वाग्रह, व्याकरण और क्षेत्रीय भिन्नता और सबसे महत्वपूर्ण मानव अनुवाद का महत्व। फिर भी हमें इन चुनौतियों का सामना करना है और ए आई का उपयोग हिंदी के विकास को सुनिश्चित करने के लिए करना है। हमें हिंदी के लिए अधिक डेटासेट बनाने, ए आई मॉडल को बेहतर बनाने और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। इस तरह, हिंदी की शक्ति का उपयोग करके न केवल अपनी पहचान बनाए रखेगी, बल्कि वैश्विक मंच पर पर भी अपनी पहुँच बढ़ाएगी।

पूजा चक्रबर्ती
अधिकारी
बैक ऑफिस, गुवाहाटी

सिंगापुर : अनुशासन, नवाचार और सांस्कृतिक संगम का पथ

यह यात्रा वृत्तांत मेरा और मेरे परिवार के सिंगापुर यात्रा पर आधारित है। यह यात्रा न केवल आधुनिकता और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम थी, बल्कि यह एक ऐसे अनुभव की कहानी है जो मन, शरीर और आत्मा-तीनों को झंकृत कर गई।

16 अप्रैल की शाम, जैसे ही हम सिंगापुर के चांगी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे, वहाँ की स्वच्छता, अनुशासन और तकनीकी दक्षता ने हमें तुरंत प्रभावित किया। "सिंगापुर में स्वागत है" की मुस्कान लिए हुए एयरपोर्ट स्टाफ के साथ हमारा पहला संवाद हुआ। हॉलिडे इन नोवेना होटल की ओर रवाना होते समय रात की रोशनी में चमकता शहर हमें एक सपने की तरह प्रतीत हुआ।

जेवेल चांगी एयरपोर्ट, सिंगापुर

पहला दिन: यूनिवर्सल स्टूडियोज़ और नाइट सफारी की मस्ती : 17 अप्रैल की सुबह उत्साह से भरी थी। सुबह 9 बजे यूनिवर्सल स्टूडियोज़ की ओर प्रस्थान हुआ। जैसे ही पार्क में प्रवेश किया, आंखों के सामने एक जादुई दुनिया बिखर गई। ट्रांसफॉर्मर्स की सवारी, द ममी की भूमिगत रेलगाड़ी और शेरक की जल दुनिया-हर एक राइड में रोमांच और हंसी की खनक थी।

यूनिवर्सल स्टूडियोज

शाम होते-होते हम पहुँचे नाइट सफारी के लिए। ट्राम की सवारी करते हुए जब गैंडे, हिरण और सिंह हमारी आँखों के सामने से गुजरे, तो ऐसा लगा जैसे जंगल हमारे साथ सांसें ले रहा है। "प्रकृति को देखने

का सबसे अच्छा तरीका है, उसके साथ घुल जाना।” यह विचार तब चरम पर था।

दूसरा दिन : गार्डन बाय द बे - प्रकृति की गोद में 18 अप्रैल की दोपहर का समय गार्डन बाय द बे के नाम रहा। फ्लावर

गार्डन्स बाई द बे सिंगापुर

डोम में दुनिया भर के फूलों की खुशबू ने हमारी इंद्रियों को जैसे सम्मोहित कर लिया। बादलों से भरे क्लाउड फॉरेस्ट में चलते हुए पानी की फुहारें और ठंडी हवा ने थकान को पल भर में उड़ा दिया।

यह वह क्षण था जब हमने “जिंदगी की तेज़ रफ्तार में कभी-कभी ठहराव भी जरूरी होता है” का असली मतलब महसूस किया।

तीसरा दिन : सेंटोसा द्वीप का जादू : 19 अप्रैल की सुबह से ही रोमांचक थी। केबल कार की ऊँचाई से नीचे दिखता नीला समुद्र और हरे द्वीपों का दृश्य मन मोह लेने वाला था।

सी एक्वेरियम, सेंटोसा आइलैंड सिंगापुर

SEA Aquarium में रंग-बिरंगी मछलियों की दुनिया में बच्चों की तरह खो जाना भी एक अनुभव था।

मैडम तुसाद में जब हमने शाहरुख खान और ब्रूस ली की मोम की प्रतिमाओं के साथ तस्वीरें खिंचवाई, तो लगा जैसे हम खुद भी किसी फिल्मी सीन का हिस्सा हैं। और शाम को "Wings of Time" शो की रोशनी, पानी और संगीत का संगम हमारे मन में स्थायी छाप छोड़ गया।

चौथा दिन : शहर की सैर और क्रूज़ की शुरुआत 20 अप्रैल को सिंगापुर सिटी टूर ने हमें शहर की आत्मा से रूबरू कराया। मेरलायन पार्क, मरीना बे सैंड्स और चाइनाटाउन -

मेरिलोन पार्क सिंगापुर

हर जगह की अपनी कहानी थी, अपना स्वाद था।

दोपहर बाद, हम पहुँचे मरीना बे क्रूज़ सेंटर। जैसे ही क्रूज़ रवाना हुआ, समुद्र की ठंडी हवा और डेक पर खड़े होकर दूर जाती शहर की लाइटों ने दिल को एक अलग ही एहसास दिया-जैसे समय थम गया हो।

पाँचवां दिन : समुद्र की गोद : में 21 अप्रैल पूरा दिन समुद्र में क्रूज़ पर बीता। सुबह की कॉफी समुद्र की लहरों के संगीत के साथ, और दिन भर बच्चों की हँसी, स्वादिष्ट भोजन और मनोरंजन ने हमें जैसे किसी राजा की तरह महसूस कराया। कभी-कभी जीवन को बस जी लेने देना चाहिए-यह विचार इस दिन बार-बार मन में आया।

जेंटिंग ड्रीम्स, ओसियन क्रूज़ सिंगापुर

छठा दिन : वापसी की ओर : 22 अप्रैल को जैसे ही क्रूज़ ने सिंगापुर तट को छुआ, दिल में एक अजीब सा खालीपन था। हम अपने होटल नहीं बल्कि सीधे एयरपोर्ट की ओर रवाना हुए। लेकिन मन में वो सारे दृश्य घूम रहे थे-यूनिवर्सल

"सच्चा राष्ट्रीय साहित्य राष्ट्रभाषा से उत्पन्न होता है।" - वाल्टर चेनिंग।

स्टूडियोज़ की चिल्लाहट, क्लाउड फॉरेस्ट की ठंडी बूँदें, केबल कार की ऊँचाई, और क्रूज़ की शामें।

अंत में... इस यात्रा ने हमें एक सीख दी-"यात्रा का असली उद्देश्य नया अनुभव पाना नहीं, बल्कि एक नया नज़रिया पाना होता है।"

सिंगापुर एक ऐसा देश है जहाँ अनुशासन, तकनीक और प्रकृति तीनों का अद्भुत संतुलन है। हमारे परिवार के लिए यह केवल एक अवकाश नहीं था, बल्कि एक साथ बिताए अनमोल क्षणों की सौगात थी।

1. समृद्ध अनुभवों की झलकियाँ

दूरबीन से भी दूर तक दिखता अनुशासन: चांगी एयरपोर्ट पर सुव्यवस्थित प्रोसेसिंग ने यह सिखाया कि "समय की पाबंदी" केवल शब्द नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आदर्श है।

डिजिटल देश: स्मार्ट नेशन पहल के अंतर्गत हर कोने में मुफ्त वाई-फाई, कैशलेस लेनदेन और ई-गवर्नेंस ने हमें भविष्य की दुनिया का अनुभव कराया-जहाँ सरकार और नागरिक की दूरी एक क्लिक की रह गई है।

हरियाली व टेक्नोलॉजी का मेल : गार्डन बाय द बे की सुपरट्री ग्रोव में जब रात में लाइट शो और संगीत की धुनें बिखरीं, तो लगा जैसे प्रकृति ने उच्चतम तकनीक से हाथ मिलाया हो।

समुद्र से संवाद : मरीना बे सैंड्स तट पर खड़े होकर, बीच की लहरों की आवाज़ और शहर की रोशनी के बीच एक अद्वितीय शांति मिली, जो कहते हैं-"जहाँ जल मिलता है आसमान से, वहाँ मिलती है असीम संभावनाएँ।"

2. क्यों सिंगापुर विश्व के सबसे विकसित राष्ट्रों में शुमार?

अर्थव्यवस्था का चक्रवृद्धि सूत्र: वित्तीय सेवा, लॉजिस्टिक्स और हाई-टेक मैन्युफैक्चरिंग में मजबूत आधारदंड ने देश को ग्लोबल हब बना दिया।

नीतिगत स्थिरता व पारदर्शिता: "कम बोलो, ज्यादा करो" की नीति ने भ्रष्टाचार को न्यूनतम पर रोक रखा। विश्व में सार्वजनिक संस्थानों की विश्वसनीयता में सिंगापुर शीर्ष पर है।

शिक्षा और कौशल विकास: नानयांग और नेशनल यूनिवर्सिटी जैसे विश्व-स्तरीय संस्थानों ने युवा प्रतिभाओं को ग्लोबल प्लेटफ़ॉर्म प्रदान किया।

भू-राजनीतिक समझदारी: सीमित प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद, नौवहन व वाणिज्यिक मार्गों पर नियंत्रण एवं द्विपक्षीय समझौतों ने सिंगापुर को मजबूती दी।

3. इतिहास और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

इतिहास का पटल: 1819 में सर स्टैमफोर्ड रैफल्स के आगमन के साथ लंदन और चीन-भारत व्यापार मार्ग का केंद्र बनने की यात्रा शुरू हुई। 1965 में मलेशिया से पृथक्करण के बाद, छोटे-से द्वीप ने अपनी आत्म-निर्भरता और राष्ट्रीय पहचान को नया आयाम दिया।

बहुजातीयता का संगम: चीनी, मलय, भारतीय और यूरोपीय वर्गों का सामंजस्य इस द्वीप राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर है। त्योहारों का रंग, खानपान का स्वाद और भाषाओं की लय में इस विविधता का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

आधुनिकता में जड़े रूढ़ियां: "पारंपरिकता का आदर, प्रगति का पथ" सिंगापुर की संस्कृति का मूल मंत्र है-जहाँ लोकनृत्य से लेकर आधुनिक आर्ट इन्स्टॉलेशन्स तक सबका समावेश है।

निष्कर्ष : सिंगापुर यात्रा ने हमें दिखाया कि चाहे भू-आकृतिक सीमाएँ कितनी भी संकीर्ण क्यों न हों, अनुशासन, नवाचार और बहुसांस्कृतिक संवाद देश को विश्व पटल पर अग्रसर कर देते हैं। जैसा कि प्रोफेसर क्लेटन क्रिस्टेंसन ने कहा था,

"इनोवेशन ही प्रगति की पहली सीढ़ी है।"

सिंह द्वीप के इस उपवन में हमने अनुशासन और नवाचार दोनों का स्वाद चखा, और जाना कि असली विकास का मतलब केवल इमारतों की ऊँचाई नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और नीति की स्पष्टता भी है।

"जीवन एक यात्रा है, मंज़िल नहीं।"
राल्फ वाल्डो इमर्सन

इस विचार को पूरी तरह जीकर हम लौटे, दिल में ढेर सारी यादें और मन में अगली यात्रा की योजना लिए।

मिशन कर्मयोगी: नियम आधारित प्रशिक्षण से भूमिका आधारित प्रशिक्षण तक का ऐतिहासिक सफर

अथोपकम निशिकांता सिंह
वरिष्ठ प्रबन्धक (मानव संसाधन)
मंडल कार्यालय, इम्फाल

भारतीय लोक प्रशासन के इतिहास में "मिशन कर्मयोगी" एक ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी पहल के रूप में उभरा है। यह पहल भारत सरकार द्वारा सिविल सेवाओं को अधिक प्रभावी, उत्तरदायी और नागरिक-केंद्रित बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य पारंपरिक नियम-आधारित प्रशिक्षण प्रणाली को बदलकर एक ऐसी प्रणाली विकसित करना है जो भूमिका-केंद्रित, कौशल-आधारित और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

पारंपरिक सिविल सेवा प्रशिक्षण प्रणाली दशकों से एक स्थिर ढांचे पर आधारित रही है, जिसमें मुख्य रूप से नियमों, प्रक्रियाओं, मैनुअल और अधिनियमों का अध्ययन कराया जाता था। हालांकि यह ज्ञान प्रशासनिक कार्यों की नींव है, लेकिन आज के तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में यह पर्याप्त नहीं रह गया है। तकनीकी प्रगति, सामाजिक-आर्थिक बदलाव, और नागरिकों की बढ़ती अपेक्षाएं एक ऐसे प्रशासन की मांग करती हैं जो न केवल नियमों का पालन करे, बल्कि नवाचार, संवेदनशीलता और रणनीतिक दृष्टिकोण के साथ कार्य करे।

मिशन कर्मयोगी इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। यह पहल एक सिविल सेवक को केवल एक "नौकरशाह" के रूप में नहीं, बल्कि एक "कर्मयोगी" के रूप में विकसित करने का प्रयास है। एक ऐसा कर्मयोगी जो न केवल नियमों और प्रक्रियाओं का जानकार हो, बल्कि नेतृत्व क्षमता, टीम भावना, समस्या समाधान की योग्यता, डेटा विश्लेषण, तकनीकी दक्षता और संवेदनशीलता जैसे गुणों से भी युक्त हो।

इस मिशन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है इसका डिजिटल प्लेटफॉर्म – iGOT-Karmayogi। यह एक व्यापक, एकीकृत और सर्वसुलभ ऑनलाइन मंच है, जो प्रत्येक सिविल सेवक को उसकी भूमिका, कार्यक्षेत्र और करियर के चरण के अनुसार व्यक्तिगत प्रशिक्षण मॉड्यूल प्रदान करता है। यह प्लेटफॉर्म आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग करता है ताकि प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी और प्रासंगिक बनाया जा सके।

iGOT-Karmayogi प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध पाठ्यक्रमों में प्रशासनिक दक्षता, नीति निर्माण, डिजिटल

"भाषा की एकता जाति की एकता को कायम रखती है।" - राहुल सांकृत्यायन।

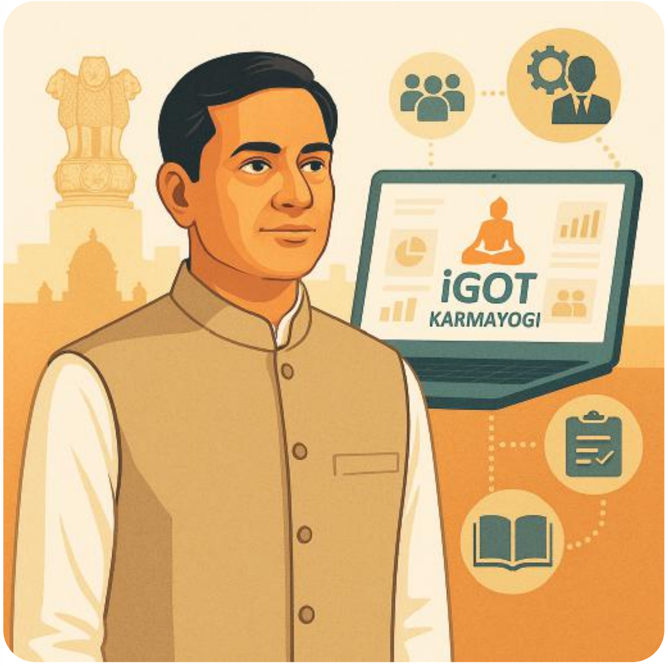

साक्षरता, नेतृत्व विकास, नैतिकता, सार्वजनिक सेवा मूल्यों, और नागरिक सहभागिता जैसे विषयों को शामिल किया गया है। यह प्लेटफॉर्म सिविल सेवकों को न केवल ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि उन्हें व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए तैयार भी करता है। इससे वे अपने कार्यक्षेत्र में अधिक प्रभावी ढंग से निर्णय ले सकते हैं और नागरिकों को बेहतर सेवाएं प्रदान कर सकते हैं।

मिशन कर्मयोगी का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है – निरंतर सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देना। यह पहल मानती है कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है और एक सिविल सेवक को अपने पूरे करियर के दौरान नए कौशल और ज्ञान अर्जित करते रहना चाहिए। इसके लिए एक मजबूत मूल्यांकन प्रणाली भी विकसित की गई है, जो यह सुनिश्चित करती है कि प्रशिक्षण केवल औपचारिकता न होकर, वास्तविक प्रभाव उत्पन्न करने वाला हो।

इसके अतिरिक्त, मिशन कर्मयोगी में साझेदारी आधारित दृष्टिकोण को भी अपनाया गया है। इसमें केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ निजी क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थान और विशेषज्ञ संगठनों की भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया गया है। इससे प्रशिक्षण की गुणवत्ता और विविधता में वृद्धि होती है।

निष्कर्षतः मिशन कर्मयोगी केवल एक प्रशिक्षण सुधार नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक प्रशासनिक संस्कृति परिवर्तन की दिशा में एक ठोस कदम है। इसका उद्देश्य केवल यह नहीं है कि अधिकारी क्या करें, बल्कि यह भी है कि वे कैसे करें – और वह भी अधिक प्रभावी, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित तरीके से। यह पहल भारत को एक उत्तरदायी, दक्ष और भविष्य के लिए तैयार प्रशासनिक तंत्र प्रदान करने की दिशा में अग्रसर है।

यह मिशन भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में एक मजबूत आधार प्रदान करता है, जहाँ प्रशासनिक सेवाएं केवल नियमों तक सीमित न रहकर, परिणामों पर केंद्रित हों और आम नागरिक के जीवन में वास्तविक परिवर्तन लाने में सक्षम हों।

अंशिता मौर्या
प्रबंधक
मंडल कार्यालय, जोरहाट

महिला सशक्तिकरण : देश के विकास में सहायक

प्रसंग 1 – मणिपुर की मैरीकॉम एक छोटे किसान परिवार से थी। सीमित साधन, सामाजिक बंधन और आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होनें बॉक्सिंग को अपना लक्ष्य बनाया। कई बार असफल हुई, पर हर बार पहले से अधिक दृढ़ होकर लौटीं।

मैरीकॉम का जीवन संघर्ष और सफलता की ऐसी मिशाल है जो बताती है कि सशक्त नारी न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे राष्ट्र को प्रेरित कर सकती है।

प्रसंग 2 – पाकिस्तान की मलाला युसुफजई, जिन्होनें बालिका शिक्षा के अधिकार के लिए आवाज़ उठाई, आतंकवादियों के हमले का शिकार बनी लेकिन पीछे नहीं हटी। आज वह सबसे कम उम्र की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता है।

मलाला का साहस यह दर्शाता है कि शिक्षा ही सशक्तिकरण की जड़ है- जब एक लड़की पढ़ती है तो पूरा समाज प्रगति करता है।

उपयुक्त दो प्रसंग महिला सशक्तिकरण के महत्व पर प्रकाश डालते है कि महिलाएँ अगर सशक्त होंगी तो वे देश के विकास में सहायक होंगी।

महिला सशक्तिकरण : अर्थ और उद्देश्य

विश्व बैंक के अनुसार महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य है- महिलाओं को ऐसे अवसर और संसाधन प्रदान करना जिससे वे अपने जीवन की दिशा, निर्णय और संसाधनों के उपयोग पर पूर्ण अधिकार रख सकें।

इसका उद्देश्य है कि महिलाएं समाज में समान भागीदारी आर्थिक स्वतंत्रता और राजनीतिक तथा समाजिक निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

सशक्त महिला : राष्ट्र विकास

महिला सशक्तिकरण का पहला आधार शिक्षा है। शिक्षित महिलाएँ न केवल अपने परिवार को ज्ञान देती हैं, बल्कि समाज में जागरूकता फैलाती हैं और राष्ट्र निर्माण करती हैं। उदाहरण के लिए कल्पना चावला ने अंतरिक्ष विज्ञान में भारत का नाम रौशन किया।

इस प्रकार जब महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती

हैं, तो वे रोजगार सृजन और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं। उदाहरण के लिए फाल्गुनी नायर (नाईका की संस्थापक) ने महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर खोले और खुद एक सफल उद्यमी बनीं।

इसी प्रकार सशक्त महिलाओं ने निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय होकर राष्ट्रीय नीतियों और समाज सुधारों में योगदान दिया। उदाहरण के लिए इंदिरा गांधी और निर्मला सीतारमण ने देश की राजनीतिक दिशा और नीतियों को मजबूती दी।

खेल के क्षेत्र में भी ठीक इसी तरह पी.वी.सिंधु, मिराबाई चानू, मनु भास्कर ने देश का नाम विश्व स्तर पर ऊँचा किया और युवाओं के लिए प्रेरणा बनीं।

इसी प्रकार लाखों महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार और गाँव की आर्थिक स्थिति सुधार रही हैं।

सशक्तमहिला वर्तमान समय की देन नहीं है बल्कि प्राचीन भारत में भी गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, लोपामुद्रा जैसी विदुषी महिलाओं ने वेद उपनिषदों में अपनी विद्वता से स्थान प्राप्त किए।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नाइडू, एनी बेसेन्ट ने भारत को आज़ादी दिलाने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

महिला सशक्तिकरण : समस्याएँ और चुनौतियाँ

सर्वप्रथम, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में कई लड़कियाँ विद्यालय नहीं जा पातीं। परिणामस्वरुप महिलाएँ रोजगार और आर्थिक अवसरों से वंचित रहती हैं।

कई महिलाएँ आर्थिक रूप से पुरूषों पर निर्भर रहती हैं। रोजगार की कमी और कम वेतन के कारण भी महिलाएँ आत्मनिर्भर नहीं बन पातीं। इस कारण उनेक निर्णय लेने की क्षमता सीमित रहती है। 18वीं लोक सभा में केवल 13% महिला सदस्य हैं। पंचायत स्तर पर 33 % आरक्षण के बावजूद प्रधान पति/ सरपंच पति संस्कृति के कारण महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है।

सबसे चिंताजक स्थिति घरेलू हिंसा और स्वास्थ्य सुविधाएँ और पोषण की कमी के कारण महिलाओं की शारीरिक और मानसिक क्षमता में कमी है।

महिला सशक्तिकरण : चुनौतियों का समाधान

भारत सरकार नें महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और समान अवसर देने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई हैं, जैसे- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, प्रधान मंत्री मातृत्व योजना, स्टैंड अप इंडिया, उज्ज्वला योजना, सुकन्या समृद्धि योजना इत्यादि।

योजनाओं का उद्देश्य बेटियों को जन्म से लेकर रोजगार तक हर स्तर पर सशक्त बनाना है। इसके साथ ही बाल विवाह और दहेज प्रथा के खिलाफ कानून और संसद में महिला आरक्षण (106 संविधान संशोधन) महिलाओं को शक्ति प्रदान करता है।

सरकारी योजनाओं से अधिक आवश्यक है समाज की सोच में परिवर्तन। जब तक परिवार और समाज, महिलाओं को समान दृष्टि से नहीं देखेंगे, तब तक सशक्तिकरण अधूरा रहेगा। हर माता-पिता को चाहिए कि वे बेटी को वही शिक्षा और अवसर दें जो बेटे को दी जाती है, तभी असली परिवर्तन संभव है।

महिला सशक्तिकरण कोई नारा नहीं बल्कि नवभारत की नीव है। भारत तभी 'विश्वगुरू' बनेगा जब हमारी आधी आबादी 'महिलाएँ' स्वतंत्र विचारों, आत्मविश्वास और सम्मान के साथ आगे बढ़ेगी और मैरी कॉम और मलाला युसुफजई से प्रेरणा लेंगी।

"नारी ही सृजन है नारी ही प्रेरणा है,
नारी के बिना विकास अधूरा स्वप्न है।"

हमारे प्राचीन भारतीय ग्रंथ में भी लिखा है-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:"

अर्थात, जहाँ नारी की पूजा होती है, वहीं देवता निवास करते हैं।

इसलिए यह कहना उचित होगा कि महिला सशक्तिकरण ही देश के विकास का वास्तविक मार्ग है।

शोभित मेहता
प्रबंधक
नतुन बाज़ार शाखा
सिलचर मंडल

ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाएँ : चुनौतियाँ एवं अवसर

भूमिका : भारत का ग्रामीण क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। लगभग दो-तिहाई भारतीय जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प तथा लघु उद्योगों पर निर्भर है। ऐसे में ग्रामीण बैंकिंग सेवाएँ केवल आर्थिक लेन-देन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का आधार हैं।

बैंकों के माध्यम से ग्रामीण जनता को बचत, ऋण, बीमा, पेंशन, सब्सिडी और डिजिटल भुगतान जैसी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। इस प्रकार बैंकिंग सेवाएँ ग्रामीण विकास और वित्तीय समावेशन के लिए अनिवार्य हैं।

ग्रामीण बैंकिंग का महत्व : बैंक ग्रामीण जीवन में विकास का सेतु हैं। ये न केवल धन के सुरक्षित भंडारण का साधन प्रदान करते हैं, बल्कि किसानों, लघु उद्यमियों और स्वरोजगार से जुड़े लोगों को ऋण देकर आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री जन धन योजना, मुद्रा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड योजना और डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) जैसी योजनाओं ने ग्रामीण लोगों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा है। इससे पारदर्शिता और आर्थिक आत्मनिर्भरता दोनों बढ़ी हैं।

पंजाब नैशनल बैंक कई जिलों में लीड बैंक के रूप में कार्य करता है, यानी यह ग्रामीण बैंकिंग योजनाओं का समन्वय और निगरानी सुनिश्चित करता है। इसका उद्देश्य क्षेत्र में वित्तीय समावेशन बढ़ाना और स्थानीय बैंकिंग नेटवर्क को मज़बूत करना है।

ग्रामीण बैंकिंग की प्रमुख चुनौतियाँ

1. भौगोलिक व अवसंरचनात्मक कठिनाइयाँ : भारत के अनेक गाँव अब भी दूरस्थ और कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित हैं। सड़क, संचार और बिजली की सीमित उपलब्धता बैंक शाखाओं के संचालन में बाधा बनती है। उत्तर-पूर्व भारत और असम जैसे राज्यों में यह समस्या थोड़ी अधिक है, जहाँ नदियाँ और पहाड़ परिवहन को प्रभावित करते हैं।

2. वित्तीय साक्षरता की कमी : गाँवों में अधिकांश लोग बैंकिंग प्रक्रियाओं से पूरी तरह परिचित नहीं हैं। कई ग्रामीण केवल खाते खुलवाते हैं पर नियमित रूप से उपयोग नहीं करते। इससे बैंकिंग सेवाओं का वास्तविक लाभ सीमित रह जाता है।

3. तकनीकी चुनौतियाँ : डिजिटल बैंकिंग का विस्तार हो रहा है, परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और नेटवर्क की समस्या के कारण मोबाइल बैंकिंग और ऑनलाइन भुगतान पूरी क्षमता से नहीं चल पाते।

4. आर्थिक अस्थिरता : ग्रामीण आय मुख्यतः कृषि पर

"हिंदी विश्व की महान भाषा है।" - राहुल सांकृत्यायन।

निर्भर है, जो प्राकृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है। फसल खराब होने या बाजार में गिरावट आने पर किसान ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाते हैं, जिससे बैंक नए ऋण देने से हिचकिचाते हैं।

5. प्रशासनिक व मानवीय सीमाएँ : कई ग्रामीण शाखाओं में प्रशिक्षित स्टाफ की कमी, जटिल प्रक्रियाएँ और निगरानी की कमी बैंकिंग सेवाओं की गति को धीमा करती हैं।

ग्रामीण बैंकिंग के अवसर

1. वित्तीय समावेशन का विस्तार :जन धन योजना और डिजिटल इंडिया जैसी सरकारी पहलों ने गाँवों में बैंकिंग की पहुँच को तेज़ी से बढ़ाया है। आज अधिकांश परिवारों का बैंक खाता है और सरकारी लाभ सीधे खातों में पहुँच रहे हैं।

2. डिजिटल बैंकिंग और तकनीकी नवाचार : मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई और आधार आधारित भुगतान प्रणाली ने ग्रामीण बैंकिंग को सरल बना दिया है। अब लोग बैंक की शाखा में जाए बिना लेन-देन कर सकते हैं। यह परिवर्तन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आधुनिक बना रहा है।

3. कृषि और ग्रामीण उद्योगों में अवसर : ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, डेयरी, बागवानी, हस्तशिल्प और लघु उद्योगों से जुड़े ऋण अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं। बैंक इन क्षेत्रों में ऋण, बीमा और परामर्श सेवाएँ प्रदान करके अपना व्यवसाय भी बढ़ा सकते हैं और रोजगार भी सृजित कर सकते हैं।

4. महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह : स्वयं सहायता समूहों (SHGs) ने ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय साक्षरता और बचत की आदत को बढ़ावा दिया है। महिलाएँ अब बैंकिंग प्रणाली से जुड़कर सूक्ष्म ऋण योजनाओं का लाभ ले रही हैं, जिससे परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है।

5. सरकारी योजनाएँ और बैंक सहयोग : सरकार और बैंक मिलकर किसानों, शिल्पकारों और लघु उद्योगों को सहायता दे रहे हैं। कई राज्यों में ग्रामीण स्तर पर डिजिटल सेवाओं और ऋण पहुँच में सुधार हुआ है। पंजाब नैशनल बैंक जैसी लीड बैंकिंग संस्थाएँ ग्रामीण बैंकिंग नेटवर्क को समन्वित कर रही हैं, जिससे योजनाओं का प्रभाव अधिक स्पष्ट और सुसंगत हो रहा है।

उत्तर-पूर्व और असम का संक्षिप्त उल्लेख : भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में, विशेष रूप से असम, ग्रामीण बैंकिंग का विस्तार अपेक्षाकृत अधिक हुआ है। यहाँ गाँवों में बैंकिंग सेवाओं की पहुँच बेहतर है और डिजिटल भुगतान व ग्राहक सेवा केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण जनता को सुविधा मिल रही है। हालांकि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, फिर भी यह क्षेत्र ग्रामीण बैंकिंग में सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

भविष्य की दिशा

ग्रामीण बैंकिंग को सशक्त बनाने के लिए निम्न कदम आवश्यक हैं—

1. बैंकिंग अवसंरचना को मज़बूत किया जाए और हर पंचायत स्तर पर बैंकिंग प्रतिनिधि नियुक्त हों।
2. वित्तीय साक्षरता अभियान को विद्यालयों और सामुदायिक केंद्रों तक पहुँचाया जाए।
3. डिजिटल नेटवर्क और इंटरनेट सुविधाएँ सुधारी जाएँ।
4. कृषि आधारित ऋण प्रणाली को सरल और पारदर्शी बनाया जाए।
5. महिलाओं और युवाओं के लिए विशेष उद्यमिता ऋण योजनाएँ बढ़ाई जाएँ।

निष्कर्ष : ग्रामीण बैंकिंग भारत के समग्र विकास की धुरी है। यह केवल वित्तीय व्यवस्था का हिस्सा नहीं, बल्कि समाज के निचले तबके को मुख्यधारा से जोड़ने का माध्यम है।

यद्यपि चुनौतियाँ मौजूद हैं, अवसर कहीं अधिक हैं। पंजाब नैशनल बैंक जैसी लीड बैंकिंग संस्थाएँ ग्रामीण बैंकिंग नेटवर्क को समन्वित कर रही हैं। उत्तर-पूर्व भारत और असम में हाल की प्रगति यह दर्शाती है कि निरंतर प्रयास और नीतिगत समर्थन से देश का हर गाँव बैंकिंग से जुड़ सकता है। जब ग्रामीण भारत वित्तीय रूप से सक्षम होगा, तभी "समावेशी विकास" का सपना साकार होगा।

विश्व विजेता हैं हम

तुम दोगे पर हम लेंगे नहीं
जल्लादों से समझौता करते नहीं
औकात पता है हमें उनकी।
विश्व विजेता हैं हम,
रण हो या मैदान
विश्व विजेता हैं हम।
सिन्दूर भी है तिलक भी,
साहस भी है उत्साह भी
बहादुरी भी है कलाकारी भी।

भारतवर्ष किसी को झुकाता नहीं है
भारतवर्ष किसी को निचोड़ता नहीं है
भारतवर्ष किसी को डराता भी नहीं है।
भारतवर्ष सभी को संभालता है,
भारतवर्ष सभी को उभारता है,
भारतवर्ष सभी को बसाता है।
हमारा सब्र हमारी कमजोरी नहीं
हमारी मित्रता हमारी मजबूरी नहीं
हमारी शत्रुता तुम्हें भूलने देंगे नहीं।
तुम दोगे पर हम लेंगे नहीं
जल्लादों से समझौता करते नहीं
औकात पता है हमें उनकी।
विश्व विजेता हैं हम,
सिन्दूर हो या तिलक
विश्व विजेता हैं हम।

सत्यप्रिय दास
सहायक महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

ख़ामोशियों की आवाज़

चीखती दीवारें सन्नाटों से बात करती है
सिसकियाँ लेती है रात तारों से बात करती है

साजिशें खन्नास को विरासत में मिली है
मजहब - ए - आदम मोहब्बत की बात करती है

मौज़ू - ए - हाल समझना कोई मुश्किल तो नहीं
सदाक़त अब भी इशारों में बात करती है

रौशनी इल्म की जरुरत है तरक्की के लिए
सियासत बस्तियां जलाने की बात करती है

लाख पर्दो में छुपा ले कोई किरदार अपना
रूह इंसान की आइने से बात करती है

ना समझ लोग गलत फहमी में भी जी लेते हैं
आँख खुल जाये तो फिर अक्ल बात करती है

एक लड़की मेरे ख्वाबों में आती रहती है
मुझसे वादा - ए -वफ़ा निभाने की बात करती है !!

खन्नास – शैतान की औलादें

ख़ुर्शीद आलम अंसारी
उप मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, नगांव

"भारत सरस्वती का मुख संस्कृत है।" - म. म. रामावतार शर्मा।

शुभम कुमार
विधि अधिकारी
मंडल कार्यालय, नगांव

क़दम जो बढ़े विश्वास के साथ (पहला दिन : एक नया अध्याय)

जब स्वप्नों ने संकल्प का हाथ थामा,
तब सफलता ने खुद आगे बढ़कर सलाम किया।
आज उस राह पर पहला क़दम रखा है,
जहाँ कर्तव्य है, ज़िम्मेदारी है - और गर्व भी बेहिसाब किया।

पंजाब नैशनल बैंक
एक संस्था नहीं, एक परंपरा है।
एक नाम नहीं, एक भरोसा है।
एक काम नहीं, एक सेवा है।

मैं आया हूँ यहाँ कानून की लौ लेकर,
हर अनुबंध, हर सलाह में पारदर्शिता लेकर।
जहाँ न्याय और नीति चले साथ-साथ,
और हर फ़ैसले में हो जनहित की बात।

मैं सिर्फ़ एक विधि अधिकारी नहीं,
मैं उस दीवार की ईंट हूँ जो भरोसे से बनी है।
जहाँ ग्राहक, संस्थान और क़ानून-
तीनों का संतुलन ही असली जीत की घड़ी है।

चल पड़ा हूँ एक लम्बे सफ़र पर,
जहाँ हर दिन एक नई सीख होगी।
पी. एन .बी. की सेवा में खुद को ढालते हुए,
हर चुनौती में एक नई जीत होगी।

नमन है उस पहले दिन को,
जहाँ मैं एक नाम से बढ़कर-एक ज़िम्मेदारी बन गया।
पी. एन .बी. का हिस्सा बनकर,
मैं एक बदलाव की कहानी बन गया।

घर

छोटी सी उम्र में कब, हम इतने बड़े हो गए,
कि कमाने की खातिर, घर और घरवालों से दूर हो गए।

जीवन की भाग- दौड़ में खुद को भी भूल गए,
ना जाने घर के कितने सावन, खाली ही झूले झूल गए।

रिश्ते तो अब फोन कॉल्स तक ही सीमित हैं।
दोस्तों से शामों के मिलने के अब लम्हें ही खो गए।

जिम्मेदारियों के बोझ, अब खुद उठाने लगे हैं।
पता भी नहीं चला कब इतने हम काबिल हो गए।

सैलरी की "पच्चीस" तारीख की खुशी के लिए
हम अब "आगरा से जोरहाट" के हो गए।

खुद के घर भी अब बहुत सोच के जाना होता है,
कि घर गए हुए भी मुझको, अब महीने हो गए।

कमाने की खातिर हम घर और घरवालों से दूर हो गए।

आकांक्षा सिंह
प्रबंधक
मंडल कार्यालय, जोरहाट

कल, आज और कल

बंद कमरे में बैठे-बैठे
कंप्यूटर स्क्रीन को ताकते रहने वाले,
याद भी है कब आख़िरी बार शाम का ढलता सूरज देखा था?

अधूरे सपनों के पीछे दौड़ लगाने वाले,
कब आख़िरी बार घर लौटते हुए पंछी की उड़ान देखी थी?
कब आख़िरी बार खुले आसमान से टपकती बूंद को पिया था,
और कब नदी किनारे बैठकर बहती हवा से बातें की थीं?

कब थोड़ा सा ठहरा था...
याद भी है?
याद भी है या भूल गए?
इस दौड़ में शरीक होकर —
जिस दौड़ में
रुकना मना है,
थमना मना है,
थकना मना है,
और ठहरना भी मना है।

और अगर कहीं तू ठहर गया,
तो तेरे आने वाले कल को
तेरे आज के ठहराव से तकलीफ़ न हो...

पर उस कल का क्या जो तू पीछे छोड़ आया है —

खेत के उस पार का वो सूरज,
जो शाम की लाली फैलाए तेरा इंतज़ार करता है,
कि तू आएगा और थोड़ी देर उसे निहारने के लिए रुक जाएगा।

वो खेत की पगडंडी, जिस पर तू पतंग के पीछे दौड़ता था,
आज भी तेरा इंतज़ार करती है कि तू आएगा और पीठ पर थपकी देकर बोलेगा —
"कैसा है?"

वो नदी, जो भरी दोपहरी की धूप में तुझे समेट लेती थी
और धो ले जाती थी तेरी थकावट,
आज फिर से तुझे याद करती है।

और उसी नदी के पास का
वो बरगद का पेड़ —
जिसकी टहनियों पर चढ़कर तूने आसमान के उस पार देखना सीखा,
आज जिससे तू कई दिनों से मिला नहीं,
अकेला-सा, खोई आँखों से
तेरे वक़्त का इंतज़ार करता है।

पर ये वक़्त न रुकेगा,
न ही तेरी दौड़।
तू 'कल-कल' करता रह जाएगा,
इस मायाजाल में जकड़ के,
अधूरे सपनों की दौड़ में खोकर...

कभी — तेरे आने वाले कल को बीते कल से मिला,
एक बार फिर... हल्का-सा ठहर जा।

विकाश उपाध्याय
प्रबंधक (सूचना एवं प्रोद्योगिकी)
मंडल कार्यालय, गुवाहाटी

"हिंदी में हम लिखें पढ़ें, हिंदी ही बोलें।" - पं. जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी।

"राजभाषा : हमारी पहचान"

शब्दों की शान, भावों की भाषा,
भारत की रग-रग में बसी परिभाषा।
हिंदी वो सुर, जो दिल से निकले,
जन से जन तक जो रिश्ता निकले।

कार्यालयों में जब गूंजे हिंदी,
तो बढ़े अपनापन, घटे दूरी बिंदी।
कर्म का संस्कार, वचन का मान,
राजभाषा है भारत की जान।

ये केवल भाषा नहीं, एक भाव है,
जो जोड़ता दिलों का गाँव है।
आदेश नहीं, स्नेह का संकेत,
एकता का ये अनमोल प्रतीक।

चलो मिलकर ये व्रत निभाएँ,
हिंदी को जीवन में अपनाएँ।
हर हस्ताक्षर, हर संवाद में,
राजभाषा गूंजे हर संवाद में।

साहिल कुमार साव
राजभाषा अधिकारी
मंडल कार्यालय, नगांव

रिकवरी की तैयारी

एक अधिकारी सुबह उठकर बैंक जाने की करता है तैयारी
आज उसकी शाखा में बहुत ही भीड़ है भारी
पेंशनधारी करता है पेंशन निकालने को मारा-मारी,
इतने में तो याद आया आज है रिकवरी की बारी।

अब तो वह बी.सी. से पूछता है क्या है उनकी तैयारी
तभी सर्किल ऑफिस ने भी पूछा कितनी है करारी
आज तो एक गाँव में रिकवरी कैंप लगाना है,
ऋणकर्ताओं से रिकवरी कर ओ.टी.एस. करवाना है।

कैंप में एक बड़े अधिकारी को बुलवाता है
अपने उत्पाद के बारे में लोगों को बतलाता है
उन्होंने लोगों को एक अच्छी बात बताई है
खाते को एनपीए करने का नुकसान भी समझाया है
सिबिल स्कोर कम होने पर आपका भविष्य खराब हो जाता है
आगे किसी भी बैंक से ऋण लेने का आसार बंद हो जाता है।

आप अपने ऋण के बकाया राशि का भुगतान कर सकते हैं
अपने खराब ऋण को मानक ऋण में बदल सकते हैं
कुछ लोगों ने कहा हमारा ऋण तो माफ़ हो गया है
सरकार के द्वारा कर्ज का सूपड़ा साफ़ हो गया है
बैंक अधिकारी कहते हैं इनका कोई प्रमाणपत्र दो,
नहीं तो, ऋण माफ़ नहीं हुआ, ओटीएस कर लो।

उन्होंने ऋण समझौता करने का आसान तरीका बतलाया,
अपने एक उत्पाद ई ओ टी एस के बारे में बतलाया
अपने खुद के मोबाईल से समझौता राशि देख सकते हैं
पैसा जमा कर अदेय प्रमाणपत्र ले सकते हैं।

इतना बतलाने पर कई लोग पैसा लेकर आते हैं
समझौता राशि देकर ऋण मुक्त हो जाते हैं
इस तरह से आज का रिकवरी कैंप बहुत ही सफल रहा
कई खातों में पैसे जमा हुए और कई एन पी ए ऋण बंद हुए।

रौशन कुमार रस्तोगी
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय, सिलचर

"समालोचना ही साहित्य मार्ग की सुंदर सड़क है।" - म. म. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी।

कलाकृतियाँ

अनिंदिता अधिकारी
मंडल अनुपालन अधिकारी
मंडल कार्यालय डिब्रूगढ़

समाद्रितो दीक्षित
सुपुत्र: सौरभ दीक्षित
मुख्य प्रबंधक
मंडल कार्यालय, सिलचर

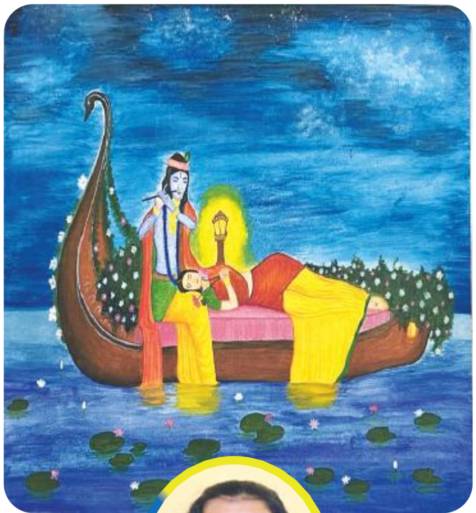

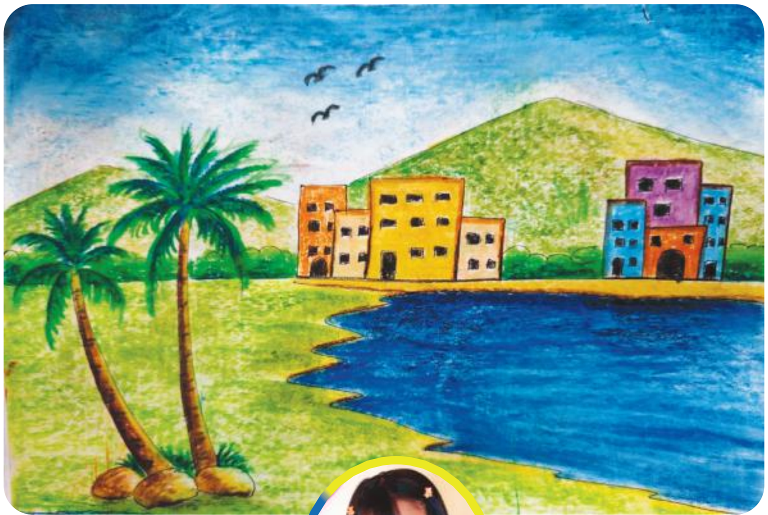

सुप्रिया दत्ता
ग्राहक सेवा सहयोगी
मंडल कार्यालय डिब्रूगढ़

सोहिनी सरकार
सुपुत्री : सुदीप सरकार
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय नगांव

विविध गतिविधियां

'पीएनबी इन्द्रधनुष संवाद' के दसवें अंक का विमोचन

अंचलाधीन राजभाषा अधिकारियों के साथ ऑनलाइन बैठक का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, श्री देवानंद दास द्वारा डिब्रूगढ़ मंडल राजभाषायी निरीक्षण

श्री बिनय कुमार, मुख्य महाप्रबंधक महोदय का गुवाहाटी के दौरे पर स्वागत करते हुए श्री पी. रोज़ कुमार, उप अंचल प्रमुख, गुवाहाटी अंचल।

राजभाषा वार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन

मंडल कार्यालय, डिब्रूगढ़ की पत्रिका 'पीएनबी सृजन' के द्वितीय अंक का विमोचन

जोरहाट मंडल द्वारा डॉ. भूपेन हज़ारिका जी की जयंती कार्यक्रम का आयोजन

मेगा कृषि आउटरीच कार्यक्रम में जिला आयुक्त (गोलाघाट) श्री पुलक महंता का स्वागत करते श्री अनिल कुमार दावड़ा मंडल प्रमुख जोरहाट

राजभाषा स्वर्ण जयंती के अवसर पर नगांव मंडल की ई पत्रिका 'पीएनबी मृत्युंजय' का विमोचन

स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर टीम जोरहाट मंडल

अंचल कार्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 21.06.2025 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया।

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।" - महात्मा गाँधी।

अंचल कार्यालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण

नराकास गुवाहाटी (बैंक) से प्राप्त व्यक्तिगत स्तर के पुरस्कार

राजभाषा कार्यान्वयन

वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु नराकास शिलांग -2 से शिलांग शाखा को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

अंचल की अन्य गतिविधियाँ

दिनांक 25.07.2025 को गुवाहाटी में आयोजित मेगा एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम के दौरान ग्राहकों को ऋण स्वीकृति पत्र वितरित करते हुए श्री डी. सुरेन्द्रन, कार्यपालक निदेशक, साथ में हैं श्री विनय कुमार, अंचल प्रमुख, गुवाहाटी अंचल, श्री उपेन्द्र कुमार, मंडल प्रमुख, गुवाहाटी मंडल एवं अन्य अधिकारीगण

श्री अजय गुप्ता, अवर सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग का अंचल कार्यालय गुवाहाटी में स्वागत करते हुए श्री विनय कुमार, अंचल प्रमुख

बैंक के कॉर्पोरेट सामजिक उत्तरदायित्व के तहत सिलचर स्थित वृद्धाश्रम में सामग्रियों का वितरण करते हुए श्री विनय कुमार, अंचल प्रमुख

जोरहाट ब्लाइंड स्कूल के परिसर में वृक्षारोपण करते हुए अंचल प्रमुख महोदय।

मंडल कार्यालय, इंफाल के दौरे के दौरान श्री विनय कुमार, अंचल प्रमुख। साथ में हैं श्री मनसिज चक्रबर्ती, मंडल प्रमुख, इंफाल (तत्कालीन) एवं अन्य अधिकारीगण।

"हिंदी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।" - महात्मा गांधी।

अंचल की अन्य गतिविधियाँ

श्री विश्वजीत पेगु, आईएएस से शिष्टाचार भेंट के दौरान श्री विनय कुमार, अंचल प्रमुख, गुवाहाटी

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के तहत जोरहाट ब्लाइंड स्कूल में संगीत वाद्य यंत्र वितरित करते हुए श्री विनय कुमार, अंचल प्रमुख तथा श्री अनिल कुमार दावड़ा, मंडल प्रमुख, जोरहाट मंडल।

मंडल कार्यालय, नगांव के दौरे के दौरान श्री विनय कुमार, अंचल प्रमुख। साथ में हैं श्री अभिमन्यु कुमार सिन्हा, मंडल प्रमुख, नगांव एवं अन्य अधिकारीगण।

स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियां

अंचल कार्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 15.08.2025 को स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया

मंडल कार्यालय, नगांव में दिनांक 15.08.2025 को स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया

डिब्रूगढ़ मंडल द्वारा स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

ख़बरों में अंचल की गतिविधियां

पंजाब नेशनल बैंक, अंचल कार्यालय गुवाहाटी में मनाया गया 79 वां स्वतंत्रता दिवस

गुवाहाटी : पानबाजार स्थित पंजाब नेशनल बैंक के अंचल कार्यालय में दिनांक 15.08.2025 को 79 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख ... को शुभकामनाएं दीं और कहा कि बैंककर्मी होने के कारण हमारे पास यह सौभाग्य है कि हम देश के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं, हम सभी को जो भी कार्य सौंपे गए ...

दैनिक पूर्वोदय

पीएनबी अंचल कार्यालय में राजभाषा समारोह

गुवाहाटी, 5 नवंबर (पू.सं.)। पानबाजार स्थित पंजाब नेशनल बैंक के अंचल कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा आज राजभाषा समारोह तथा 'भारत रत्न डॉ. भूपेन हजारिका: असमिया और हिंदी साहित्य के सेतु' विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अनूप कुमार सिंह, सहायक महाप्रबंधक ने अपने संबोधन में समारोह में प्रतिभागियों का स्वागत किया। सुधाकंठ दिवस के अवसर पर बैंक के स्टाफ सदस्यों द्वारा भारत रत्न ... किया गया, जिसमें स्टाफ सदस्यों द्वारा बढ़चढ़कर सहभागिता की गई। साथ ही इस अवसर पर हिंदी माह के दौरान आयोजित कुल 8 प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। उप अंचल प्रमुख पामुरोज कुमार ने अपने संबोधन में सभी स्टाफ सदस्यों को हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी तथा आगे भी समस्त स्टाफ सदस्यों से कार्यालय में अपना कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपना संवैधानिक दायित्व निर्वहन करते ...

दैनिक पूर्वोदय

कंपनी समाचार....

पंजाब नेशनल बैंक ने गुवाहाटी में मेगा एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया

गुवाहाटी, 25 जुलाई (पू.सं.)। ...

पंजाब नेशनल बैंक ने किया मेगा एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन

पीएनबी मंडल कार्यालय शिलचर में राजभाषा संगोष्ठी एवं पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

लखीमपुर के डेबराडोलोनी गांव में ४४ बीघे भूमि पर वृक्षारोपण अभियान

विश्व पर्यावरण दिवस पर PNB आरसेटी कछार द्वारा भव्य रैली एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

160 Views

পিএনবি'র রক্তদান শিবির অনুষ্ঠিত

স্যন্দন প্রতিনিধি, আগরতলা, ২৯ অক্টোবর।। সতর্কতা সচেতনতা সপ্তাহ উপলক্ষ্যে পাঞ্জাব ন্যাশনাল ব্যাঙ্ক আগরতলা সার্কেলের উদ্যোগে স্বেচ্ছায় রক্তদান শিবির অনুষ্ঠিত হয় বুধবার। মন্ত্রীবাড়ি রোডস্থিত শাখায় এদিন সকালে শিবির শুরু হয়েছে। সার্কেল প্রধান এবং ডিজিএম সহ এদিনের অন্যান্য আধিকারিকরা উপস্থিত ছিলেন। মোট ২২ ... শিবিরে ...

पंजाब नेशनल बैंक, मंडल कार्यालय ...

▲ पूर्वोदय संवाददाता

गुवाहाटी, 16 अगस्त। पंजाब नेशनल बैंक, मंडल कार्यालय गुवाहाटी ने भी बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ इस राष्ट्रीय पर्व को मनाया। बैंक के सभी कर्मचारी और अधिकारीगण तिरंगे के रंग में रंगे हुए बैंक परिसर में एकत्र हुए। मंडल प्रमुख उपेंद्र कुमार द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस पल ने सभी के मन में देश प्रेम की भावना भर दी। इसके बाद, मंडल प्रमुख ने स्वतंत्र... बात बैंक के सदस्यों के समक्ष रखी। साथ ही मंडल के सभी सदस्यों ने एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में देश ... लिया। इन कार्यक्र... कर्मचारियों के बच्चों ने ... जिससे यह समारोह और ...

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सौंदर्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिलचर के आरसेटी कछार में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

प्रे.सं.शिलचर, २१ जून : विश्वभर में मनाए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में पंजाब नेशनल बैंक द्वारा संचालित आरसेटी कछार, शिलचर में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस किसी विशेष थीम के साथ मनाया जाता है। वर्ष २०२५ के लिए थीम थी - 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग।' इस अवसर पर आरसेटी कछार परिसर में एक विशेष योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें आरसेटी के सभी अधिकारीगण एवं पूर्व प्रशिक्षुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान आरसेटी कछार के निदेशक श्री जगज्योति भट्टाचार्य ने योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'योग इतना आवश्यक है कि इसके माध्यम से रोगों की रोकथाम होती है। योग से ही रोगों का नाश संभव है। 'योग से होगा रोग-वियोग' - यह कहावत सदियों से प्रमाणित है। हमारे ऋषि-मुनि नियमित रूप से योगाभ्यास करते थे और दीर्घायु तथा स्वस्थ जीवन जीते थे।' उन्होंने आगे कहा कि आज की व्यस्त जीवनशैली में स्वस्थ और सबल रहने के लिए योगाभ्यास अत्यंत आवश्यक है। योग का महत्व आज केवल भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में मान्यता प्राप्त कर चुका है। इसी कारण हर वर्ष २१ जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। कार्यक्रम में आरसेटी के सीनियर फैकल्टी और कोर्स कोऑर्डिनेटर श्री शाहेद चौधरी ने भी संबोधन दिया और योग की दैनिक जीवन में उपयोगिता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि आरसेटी कछार में चलने वाले प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यशाला में योगाभ्यास और शारीरिक व्यायाम को नियमित रूप से शामिल किया गया है। इस योग शिविर का संचालन डोमेन स्किल ट्रेनर सुश्री पूर्णिमा चंद ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों को विभिन्न योगासन और प्राणायाम का अभ्यास कराया।

"राष्ट्रभाषा की साधना कोरी भावुकता नहीं है।" - जगन्नाथप्रसाद मिश्र।

हिंदी माह 2025 की झलकियाँ

अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

अंचल कार्यालय, गुवाहाटी

अगरतला मंडल

इम्फाल मंडल

गुवाहाटी मंडल

जोरहाट मंडल

डिब्रूगढ़ मंडल

नगांव मंडल

सिलचर मंडल

टोल फ्री नंबर: 1800 1800 | 1800 2021

फॉलो करें:

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : support@anjaniprakashan.com